रायपुर, वर्ष-18, संयुक्त अंक- 3-4, मार्च-अप्रैल 2022, मूल्य ₹ 10

दीप कमल

विधानसभा चुनाव परिणाम 2022

सनातन पुनर्जागरण की बेला

फिर से आए योगी श्री आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश में तथा उत्तराखंड में फिर से मुख्यमंत्री बने श्री पुष्कर सिंह धामी।

दीप कमल

संपादक
सुभाष राव

कार्यकारी संपादक
पंकज कुमार झा

मुद्रक एवं प्रकाशक विष्णुदेव साय द्वारा, भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़, के लिए मूणत ऑफसेट प्रिंटर्स रायपुर से मुद्रित एवं एकात्म परिसर, रजबंधा मैदान, रायपुर से प्रकाशित।

स्वत्वाधिकारी
भारतीय जनता पार्टी, छत्तीसगढ़

ई-मेल
jay7feb@gmail.com

फोन
0771-2233500, 4266000

सोशल मीडिया से

Dr Raman Singh @drramansingh

प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी को अमेरिकी डाटा इंटेलिजेंट फर्म मॉर्निंग कंसल्ट के सर्वे में विश्व का सबसे लोकप्रिय नेता चुना है। मोदी जी ने विश्व पटल पर भारत के गौरव और सम्मान को नया आयाम दिया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को हार्दिक बधाई एवं अभिनंदन।

Translate Tweet

Morning Consult @Mornin... · 5d
Global Leader Approval: Among All Adults morningconsult.biz/3yizdow

Vishnu Deo Sai @vishnudsai · 1M
कुछ नहीं बदला है, कांग्रेस कल भी जिहादियों के साथ थी, कांग्रेस आज भी जिहादियों के साथ है।

मुख्यमंत्री का यह विभत्स बयान निर्दोष कश्मीरी पंडितों के घाव पर नमक है।
#TheKashmirFiles

Bhupesh Baghel @bhupeshb... · 13h
इस "कश्मीर फाइल्स" फिल्म में कोई संदेश नहीं है, सब आधा अधूरा है।

Nitin Gadkari @nitin_gadkari

छत्तीसगढ़ में रायपुर-विशाखापट्टनम इकोनॉमिक कॉरिडोर के तहत, जिला कोंडागांव में NH-130CD के बसंवाही-मरंगपुरी खंड के 6-लेन रोड निर्माण के लिए ₹ 1307.16 करोड़ बजट के साथ स्वीकृति दी गई है।
#PragatiKaHighway #GatiShakti @bhupeshbaghel @vishnudsai @BJP4CGState

Translate Tweet

10:16 AM · 19 Mar 22 · Twitter Web App

Saroj Pandey @SarojPandeyBJP · 11s
खनन माफिया के विरुद्ध आवाज़ उठाती हूँ, इसलिए विधानसभा में घुस नहीं सकती हूँ..

पर विज्ञापनों की रंगीन दुनिया में 'मैं लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ'।

श्रीमती @priyankagandhi जी, अगर चुनाव अभियान से फुर्सत हो गयी हो, तो अपनी विधायिका की पीड़ा जरूर सुनें।

अंदर के पन्नों में

संविधान निर्माता बाबा साहेब 05
भाजपा स्थापना दिवस पर विशेष 08
कांग्रेस का बजटः सब गुड़ गोबर 10
खिलखिलाता कमल 11
भाजपा भारत के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी 16
चुनाव मैथेमेटिक्स का नहीं, केमिस्ट्री का विषय 19
आपकी सुरक्षा फौज से होगी फैज से नहीं 20
यूक्रेन से छात्रों की सकुशल घर वापसी 23
भूपेश राजः गैरों पे करम, अपनों पे सितम 32
अंततः छत्तीसगढ़ के इस दर्द की दवा क्या है 34

संपादकीय

कांग्रेस मुक्त भारत का साकार होता स्वप्न!

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही डा. अम्बेडकर, डा. मुखर्जी प्रभृति राष्ट्रीय शक्तियों का प्रादुर्भाव 'गैर-कांग्रेसवाद' की अलख जगाते हुए हुआ था। तब भी ये महान शक्तियां मज़बूत और अखंड भारत के स्वप्न के साथ सक्रिय रही थी। लेकिन, आज़ादी दिलाने के एक अनुचित श्रेय के साथ कांग्रेस निरंतर सत्ता में लंबे समय तक टिकी रह गयी थी। उस झूठी श्रेय के दुष्परिणाम से भविष्यद्रष्टा महात्मा गांधी भी परिचित थे। वे इसीलिए ख़त्म भी करना चाह रहे थे कांग्रेस को। लेकिन ऐन उसी सुबह उनकी दुखद हत्या कर दी गयी जिस दिन 'कांग्रेस मुक्ति' का प्रारूप वे 'कांग्रेस' में रखने वाले थे। इस त्रासद हत्या के बाद अनेक सवाल अनुत्तरित रह गए, अनेक परिस्थियां संदिग्ध रह गयी थी। सहसा ऐसा लगा मानो कांग्रेस मुक्ति का भारत का स्वप्न भी 'बापू' के साथ ही ख़त्म हो गया हो।

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा का 'कांग्रेस मुक्त भारत' अभियान वास्तव में उसी गांधी विचार को पुनः आगे बढ़ाने का उपक्रम मात्र है, जिसे लेकर मोहनदास ने कभी अफ्रिका से जम्बूद्वीप की राह पकड़ी थी। अपने गुरु गोखले के निर्देश पर जिन्होंने आगे तब के सम्पूर्ण भारत का प्रवास कर अंततः मोहन से महात्मा हो जाने की दूरी को तय किया था। लम्बी दूरी तय करने में समय तो लगना ही था आखिर। बहरहाल!

विधानसभा के हालिया चुनाव परिणाम पर अगर आप ध्यान देंगे तो पायेंगे कि महात्मा और मोदी दोनों के 'कांग्रेस मुक्ति अभियान' के पीछे आज भारत भी दौड़ पड़ा है। संयोग ही है कि सोमनाथ की गुर्जर धरती पर दोनों इतिहास पुरुषों ने जन्म लिया। भारत उदय की यह अनवरत 'दांडी यात्रा' अब बाबा विश्वनाथ के प्रांतर तक पहुचते हुए आगे भी बढ़ी है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर से लेकर असम तक के चुनाव, उपचुनाव, निकाय चुनाव सभी में भाजपा को मिला ऐतिहासिक जनादेश और पंजाब समेत हर जगह से कांग्रेस मुक्ति का समाचार वास्तव में स्वर्ग में आसीन बापू के लिए भी आह्लादकारी हो रहा होगा।

सामान्यतया राष्ट्रवादी शक्तियों का उपहास करते हुए कांग्रेस के विभिन्न वेरिएंट समय-समय पर कहते रहे थे कि – 'इस दीये में तेल नहीं, सरकार चलाना खेल नहीं।' पर हाल के कुछ दशक की राजनीतिक परिस्थियों, परिणामों और जनादेशों पर आप दृष्टिपात करेंगे तो पायेंगे कि भाजपा ने अब यह पूरी तरह प्रमाणित कर दिया है कि उसका ही केवल जन-जन से नाता है, और उसे ही सरकार चलाना भी आता है। देश पर लम्बे समय तक शासन करने वाली कांगेस का केंद्र में पिछले दो बार से मुख्य विपक्ष की अपनी हैसियत को भी गवां देना, दोनों बार भाजपा को राष्ट्र में ऐतिहासिक बहुमत, उत्तर प्रदेश जैसे सबसे बड़े और महत्वपूर्ण प्रांत में लगातार दूसरी बार शानदार विजय, वहां लगभग सभी सीटों पर कांग्रेस का ज़मानत तक नहीं बच पाना, छत्तीसगढ़ की गरीब जनता से लुटे गए अरबों के संसाधन और समय की बेशर्म बर्बादी के बाद भी कांग्रेस का वहां 403 सीटों में से 2 सीटों पर सिमट जाना, उत्तराखंड में भाजपा की लगातार जीत, गोवा में निरंतर सत्ता, मणिपुर जैसे पूर्वोत्तर के राज्यों में फिर भाजपा के पक्ष में जनादेश, असम में इकतरफा विजय... अर्थात आसेतु हिमाचल भारतीय विचार के रूप में स्थापित दल का कांग्रेस रूपी दलदली भूमि को समतल करते हुए देश में केसरिया लहराना सच्चे अर्थों में भारत की जीत है। भारतवाद की जीत है। भारतीयता और भारत बोध का विजय है यह। इस और ऐसे तमाम विजय को इतिहास अपने अभिलेखागार में स्वर्णिम मानपत्रों की तरह निस्संदेह सुरक्षित रखेगा।

हालिया परिणामों के अनेक संकेत और संदेश हैं। मृतप्राय कांग्रेस इनमें से किसी भी संदेश को ग्रहण करेगी इसमें संदेह ही है। वह किसी भी संकेत को ग्रहण नहीं करते हुए रसातल में चला जाय, निश्चित ही हिन्दुस्थान के लिए यही शुभ और लाभ का विषय भी होगा। भाजपा अब अपने प्राकट्य के 42 वर्ष पूरे कर रही है। ऐसे समय कांग्रेस के विरुद्ध प्रारंभ यह नया 'भारत छोड़ो आन्दोलन' अधिक प्रासंगिक है।

चुनाव परिणाम वास्तव में यह संकेत सा देते लग रहा कि भाजपा के 47 वर्ष का होने तक पार्टी, कांग्रेस मुक्ति के उस 'गांधी लक्ष्य' का संधान कर लेगी जिसका मसौदा रखने वाले दिन ही गांधी जी की नृशंस हत्या कर दी गयी थी। सन 47 में फिरंगी वापस गए थे, भाजपा जब 47 वर्ष की हो, तब फिरंगी ओक्टावियो ह्युम द्वारा स्थापित दल से भी भारत मुक्ति का हमारा स्वप्न साकार होगा, ऐसी संभावना इस महान विजय से बलवती हुई है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकात्मता, सुशासन, लोकतंत्र, सकारात्मक पंथनिरपेक्षता आदि के प्रति निष्ठा को भारत ने इस विजय से और अधिक सुदृढ़ किया है। भाजपा स्थापना दिवस पर इससे अधिक प्रसन्नता की बात और कुछ हो भी नहीं सकती है। है न?

स्थापना दिवस और ऐतिहासिक विजय पर अशेष-अगाध मंगल कामना, हार्दिक बधाई। ●●●

प्रतिक्रिया कृपया इस आईडी पर दें- jay7feb@gmail.com

राष्ट्रीय सामाजिक समरसता के अग्रदूत डॉ. अंबेडकर

डा. रमन सिंह

आज से लगभग 17 वर्ष पहले सन 2003 जब समाप्ति की तरफ था, नियति ने उस सर्दी में एक नया काम सौंप दिया था हमें। छत्तीसगढ़ महतारी के सेवक, मुख्यमंत्री के रूप में काम करने का। इस रूप में लगातार 15 वर्ष अपनी यात्रा और भूमिका कैसी रही, इसे इतिहास को तय करना है। लेकिन इस दौरान इश्वर ने अगर कुछ अच्छे कार्य करा लिए होंगे तो निश्चय ही इसमें जिन महापुरुषों की प्रेरणा रही उनमें बाबा साहब डा. भीम राव आंबेडकर अग्रगण्य हैं। हम सब जिस भी राजनीतिक दायित्व में होते हैं तो स्वाभाविक ही संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ से बंधे होते हैं, ऐसे में अभीष्ट यही है कि हर प्रतिनिधि स्वयं के कार्यों को संविधान निर्माता बाबा साहेब के विचारों के आलोक में आत्मनिरीक्षण करे।

छत्तीसगढ़ के रूप में हमें अपना नया राज्य अटल जी ने दिया। चुनौतियां अपार थी। आज़ादी के छः दशक गुजर जाने के बाद तक भी हमारा अंचल तब सामान्य मौलिक सुविधाओं से भी वंचित था। अफ़सोस की बात थी हमारे लिए कि सबके लिए स्वास्थ्य और शिक्षा तो दूर, शासन अपने लोगों के लिए भोजन तक की गारंटी नहीं दे पाया था। ऐसी स्थिति में हमने सबसे पहले सबको भोजन का अधिकार देने से अपनी यात्रा की शुरुआत की और आगे स्वास्थ्य और शिक्षा इन तीन प्राथमिकताओं के साथ आगे बढे। बाबा साहेब के मूलमंत्र शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो, को ही हमने तब अपनी यात्रा का पाथेय बनाया। उनके समानता और समरसता के विचारों पर ही स्वयं को चलना निर्धारित किया, कितना चल पाया इसे इतिहास पर छोड़ कर बाबा साहेब के जन्मदिन पर उन्हें कुछ शब्दांजलि समर्पित करता हूं।

कम लोगों को यह ज्ञात होगा कि मध्यप्रदेश-बिहार के आदिवासी अंचल के विकास के लिए 50 के दशक में ही बाबा साहेब ने राज्य विभाजन का प्रस्ताव दिया था जिसे अटल जी की सरकार आने पर छत्तीसगढ़-झारखंड बनाकर साकार किया गया। आज वंचितों के लिए हम आरक्षण समेत अन्य प्रावधानों से अपने आदिवासी और वंचित बंधुओं को आगे लाने में सफल हुए तो यह बाबा साहेब के संविधान से ही संभव हुआ है। जिस तरह बाबा साहेब आजन्म महिला अधिकारों के लेकर प्रयासरत रहे, स्थानीय निकायों एवं पंचायतों में पचास प्रतिशत आरक्षण देकर एक तरह से हमने बाबा साहेब को अपनी श्रद्धांजलि ही व्यक्त की थी।

डा. अम्बेडकर के साथ डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की दुर्लभ छाया चित्र। दोनों महात्मा गांधी जी के निर्देश पर नेहरू मंत्रिमंडल में शामिल हुए। दोनों गैर कांग्रेसी थे। नेहरू जी की कुनीतियों के कारण दोनों को इस्तीफा देकर सरकार से बाहर जाना पड़ा।

बाबा साहेब के विचारों को जब आप समग्रता में देखेंगे, निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर जब उनका मूल्याङ्कन करेंगे तो पायेंगे कि वास्तव में राजनीतिक स्वार्थवश उन्हें हमेशा कुछ क्षेत्रों तक सीमित कर दिया गया था। एक सोची-समझी रणनीति के तहत उन्हें राष्ट्र के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले नेता के तौर पर बताये जाने से बचा गया। उनके परिनिर्वाण के बाद भी जान-बूझ कर उनकी स्मृति को भी हमेशा पूर्वाग्रह का शिकार बना कर प्रस्तुत किया गया। जबकि सच तो यह है कि बाबा साहेब अपनी प्रज्ञा, अपने ज्ञान और कृतित्व से भी अपने समकालीनों से मीलों आगे थे। अगर राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा को देखा जाय तो भारतीय संस्कृति के प्रति स्वाभिमान से भरे एक प्रखर राष्ट्रीय के रूप में ही उनका परिचय होगा।

एक महान विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, और समाज सुधारक के साथ बाबा

साहब प्रखर संस्कृतिवादी भी थे। भारतीयता से ओतप्रोत उनके विचार आज भी हम सबके लिए पथ प्रदर्शक सिद्धांत की तरह ही हैं। अखंड भारत के विचार को जीने और उसी के निमित्त अपना जीवन समर्पित करने वाले डा. आंबेडकर ने न केवल प्राण-पण से भारत विभाजन का विरोध किया अपितु वे यह आशा भी रखते थे कि अंततः भारत अखंड होगा। बाबा साहेब ने कहा था – 'मैं हिंदुस्तान से प्रेम करता हूं। मैं जीवित रहुंगा तो हिंदुस्तान के लिए और मरूंगा तो हिंदुस्तान के लिए।' उनके अनुसार, जब तक सामाजिक समरसता का भाव पूर्णतः राष्ट्र में उत्पन्न नहीं होगा तब तक राष्ट्रवाद की स्थापना नहीं हो पाएगी।'' बाबा साहब की जीवनी लिखने वाले सी.बी. खैरमोड़े ने बाबा साहब के शब्दों को उद्दृत करते हुए लिखा है- "मुझमें और सावरकर में इस प्रश्न पर न केवल सहमति है बल्कि सहयोग भी है कि हिंदू समाज को एकजुट और संगठित किया जाये, और हिंदुओं को अन्य मजहबों के आक्रमणों से आत्मरक्षा के लिए तैयार किया जाए।''

यह पंक्तियां लिखते हुए संतोष हो रहा है कि मेरी पार्टी भाजपा को यह शक्ति मिली कि वह जम्मू-कश्मीर से संबंधित अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी कर सकी। बाबा साहेब भी इस अनुच्छेद के प्रबल विरोधी थे। वे भी अनुच्छेद 370 को राष्ट्रीय एकता में बाधक मानते थे। न केवल अनुच्छेद 370 बल्कि अन्य राष्ट्रीय सवालों पर भी डा. आंबेडकर के विचारों का आप भाजपा को अकेला उत्तराधिकारी पायेंगे। बाबा साहेब 'एक देश में एक विधान' यानी समान नागरिक आचार संहिता के भी प्रबल पक्षधर थे। उनके मतांतरण को लेकर अनेक बात कही जाती रही है लेकिन वे भारतीयता को सर्वोपरि मानते थे। उन्होंने कहा 'बौद्धमत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। मैंने सावधानी बरती है कि मेरे पंथ-परिवर्तन से इस देश की संस्कृति और इतिहास को कोई हानि न पहुंचे।

अपने प्रातः स्मरणीय महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए आपके पास दो मुख्य विकल्प होते हैं। एक तो यह कि उनके विचारों के अनुकूल समाज बनाने के लिए आप स्वयं को समर्पित करें और दूसरा, उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रखें। भाजपा ने इन दोनों अर्थों में बाबा साहेब के प्रति स्वयं को हमेशा समर्पित रखा है। यह जानकर पीड़ा हो सकती है कि 1990 तक बाबा साहेब को भारत रत्न नहीं दिया गया

"मुझमें और सावरकर में इस प्रश्न पर न केवल सहमति है बल्कि सहयोग भी है कि हिंदू समाज को एकजुट और संगठित किया जाये, और हिंदुओं को अन्य मजहबों के आक्रमणों से आत्मरक्षा के लिए तैयार किया जाए।''

था। जब भाजपा समर्थित वीपी सिंह की सरकार सत्ता में आयी तब बाबा साहेब को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। प्रसंगवश यह भी बताया जाना समीचीन होगा कि यही वह समय था जब शासकीय सेवाओं में आरक्षण की भी शुरुआत की गयी। इससे पहले केवल आरक्षण के नाम पर समाज को लड़ाने और वोट बैंक की राजनीति करने का काम ही किया गया था।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी हमेशा बाबा साहेब के विचारों और उनकी स्मृतियों के संरक्षण के प्रति गंभीर रहे हैं। उन्होंने दिल्ली स्थित बाबा साहेब के घर अलीपुर रोड में राष्ट्रीय स्मारक स्थापित कराया। मोदी जी की सरकार ने डा. आंबेडकर से जुड़े पांच प्रमुख स्थानों को 'पंच तीर्थ' के रूप में विकसित करने का कार्य किया है। मऊ में उनके जन्मस्थान। लंदन में डा. आंबेडकर मेमोरियल जहां उनकी शिक्षा हुई। नागपुर में जहां उनकी दीक्षा हुई। मुंबई में चैत्य भूमि। और दिल्ली में राष्ट्रीय स्मृति के रूप उनकी महापरिनिर्वाण भूमि स्थापित किये गए। इसी तरह भाजपा सरकार में ही संसद के सेंट्रल हॉल में बाबा साहेब का चित्र लगाया गया। इससे पहले की सरकार वहां जगह नहीं होने का बहाना करती रही थी। ज़ाहिर है इसलिए ताकि राष्ट्रीय फलक पर बाबा साहब को स्थान नहीं मिले।

एक बात का ख़ास तौर पर यहां जिक्र किया जाना आवश्यक है कि कांग्रेस हमेशा से इस बात पर अपनी पीठ ठोकती है कि अंतरिम सरकार में उसने बाबा साहेब और डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को मंत्रिमंडल में स्थान दिया। यहां यह गौर करने की बात है कि तब कांग्रेस को स्थायी सरकार के लिए जनादेश नहीं मिला था। देश में तो पहला आम चुनाव ही 1952 में हुआ था। यह भी दुखद संयोग ही रहा कि वे दोनों मंत्री (बाबा साहेब और डा. मुखर्जी) अंततः अपमानित होकर नेहरू जी के मंत्रिमंडल से इस्तीफा देने पर ही विवश किये गए थे। उसके बाद पहले आम चुनाव में बाबा साहेब की हार सुनिश्चित करने में कांग्रेस द्वारा कोई कसर नहीं छोड़ी गयी थी। यहां तक कि 1953 में भंडारा सीट से लोकसभा के उपचुनाव में भी सारे प्रयत्न करके बाबा साहेब को लोकसभा पहुचने से रोका गया। अंततः डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की कोशिशों से बाबा साहेब राज्यसभा पहुंचे। बहरहाल।

बाबा साहेब के जीवन पर जिन तीन गुरुओं का विशेष प्रभाव पड़ा, जिनसे उन्होंने ज्ञान, स्वाभिमान और शील की प्रेरणा ली, वे भगवान बुद्ध, महात्मा कबीर और महात्मा फूले थे। महात्मा कबीर की तरह ही बाबा साहेब ने भी तमाम धर्मों-मतों-सम्प्रदायों की कुरीतियों पर करारा प्रहार किया है। सौभाग्य है कि फिर भी कबीर की तरह ही बाबा साहेब भी लगभग सभी के आदर के पात्र ही रहे। हम सबने उनकी आलोचनाओं के प्रकाश में अपनी कमियों को दूर किया है। कबीर साहब के बारे में कहते हैं उनके दिवंगत होने के बाद उनके पार्थिव देह से कुछ पुष्प निकले जिन्हें सभी मतों ने आपस में में बांट लिया। बाबा साहेब के परिनिर्वाण के कुछ दशक बीत जाने के उपरान्त भी हमारे पास उनके द्वारा अन्वेषित विचार पुष्पों के सुगंध में ही हम सब भी अपने आगे का मार्ग तलाशते रहेंगे।

बाबासाहेब ने 1916 में कोलंबिया विश्वविद्यालय में 'कास्ट इन इंडिया' प्रबंध प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने लिखा- "भारत में सर्वव्यापी सांस्कृतिक एकता है। यद्यपि समाज अनगिनत जातियों में बंटा है फिर भी वह एक संस्कृति से बंधा हुआ है।" आइये इसी सुदृढ़ संस्कृति रुपी डोर से बंधे हम सब उनके सपनों को साकार करने के लिए एकजुट हों। तमाम विविधताओं के बावजूद जिस सांस्कृतिक ऐक्य के लिए बाबा साहब समर्पित रहे, हमें उनके ही सपनों का देश बनाने स्वयं को आत्मार्पित करना होगा। बाबा साहेब जिस सामजिक समरसता, देश की एकता, वंचितों का विकास आदि के आजन्म उद्यम किया, वैसा ही भारत, सांस्कृतिक रूप से एक सशक्त राष्ट्र बनाना ही बाबा साहेब को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। प्रसन्नता की बात है कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी बिल्कुल ऐसा ही कर भी रहे हैं। ●●●

बाबा साहेब की प्रेरणा से मोदी जी की सरकार ने लाये बदलाव

डॉ. अंबेडकर की सोच और विरासत की झलक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार की जनहितैषी, गरीब हितैषी नीतियों और कार्यक्रमों से मिलती है।

देश में एक विधान : अपनी किताब 'द डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में नेहरू ने एक बार भी डॉ. अंबेडकर का जिक्र तक नहीं किया है। इतनी उपेक्षा शायद इसलिए क्योंकि बाबा साहेब भारत के वंचित तबकों की मुखर आवाज़ थे। अम्बेडकर ने जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने का विरोध किया और कहा था कि धारा 370 को शामिल करके वह किसी भी कीमत पर भारत की सुरक्षा के साथ समझौता नहीं कर सकते। मोदी सरकार ने इस अनुच्छेद को निष्प्रभावी बनाया।

पंचतीर्थ का विकास : जन्मभूमि (महू), शिक्षाभूमि (लंदन), चैत्यभूमि (मुंबई), दीक्षाभूमि (नागपुर), महापरिनिर्वाण भूमि (दिल्ली) डॉ. अंबेडकर के विरासत का महिमामंडन।

श्रमयोगी मानधन योजना : यह योजना फरवरी, 2019 में शुरू की गई थी ताकि असंगठित श्रमिकों को उनके बुढ़ापे में सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। केंद्र सरकार ने मौजूदा केंद्रीय श्रम कानूनों के प्रावधानों को चार श्रम संहिताओं में व्यवस्थित और तर्क संगत बनाएं हैं – मजदूरी पर श्रमसंहिता, औद्योगिक संबंधों पर, सामाजिक सुरक्षा और कल्याण पर और व्यावसायिक सुरक्षा पर, स्वास्थ्य और काम करने की स्थिति।

गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम : इसका उद्देश्य हमारी मानव पूंजी को सबसे बड़ी संपत्ति बनाना है। 'प्रधानमंत्री जन-धन योजना' गरीबी उन्मूलन की नींव साबित हुई है। इससे करोड़ों गरीब लाभान्वित हुए हैं। आजतक 44.88 करोड़ बैंक खाते खोले जा चुके हैं।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना : इस योजना के तहत 10 करोड़ से ज्यादा एलपीजी कनेक्शन जारी किए जा चुके हैं।

पीएम-किसान सम्मान निधि योजना : इस योजना के तहत पूरे भारत में 14.5 करोड़ से अधिक किसानों को 2,000 रुपये की तीन किस्तों में हर साल 6,000 रुपये की पेशकश करती है। यह राशि सीधे किसानों के बैंक खातों में ट्रांसफर की जाती है।

प्रधानमंत्री आवास योजना

झुग्गी-झोपड़ी वालों के लिए आवास सुविधा स्थापित करने के लिए दूरदर्शी भाजपा सरकार की पहल है। 20 मार्च, 2022 तक, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत कुल 1.15 करोड़ घरों को मंजूरी दी गई है, जिनमें से 94.79 लाख घरों को जमीनी स्तर पर तैयार किया गया है और लगभग 56.2 लाख घरों को पूरा किया गया है।

प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्म निर्भर निधि (पीएमस्वनिधि) योजना : इसका उद्देश्य रेहड़ी-पटरी वालों को न केवल ऋण प्रदान कर के बल्कि उनके समग्र विकास और आर्थिक उत्थान के लिए सशक्त बनाना है। इस योजना के तहत कुल 2 मिलियन आवेदन प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 752191 स्वीकृत किए गए हैं और 218751 ऋण पहले ही वितरित किए जा चुके हैं।

आयुष्मान भारत : दुनिया का सबसे बड़ा सरकारी वित्त पोषित स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रम है, जिसके 50 करोड़ से अधिक लाभार्थी हैं।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना : कृषि बीमा के लिए भारत सरकार की प्रमुख योजना है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक आपदा के परिणामस्वरूप अधिसूचित फसलों की विफलता की स्थिति में किसानों को बीमा कवरेज और वित्तीय सहायता प्रदान करना है। 10 करोड़ से अधिक किसान पंजीकृत।

अंबेडकर सोशल इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन मिशन : उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्रों के बीच नवाचार को बढ़ावा देने के लिए की स्थापित। इस मिशन के तहत अनुसूचित जाति के युवाओं को उनके स्टार्ट-अप विचारों को वाणिज्यिक उद्यमों में बदलने के लिए 30 लाख रुपये और तीन साल की अवधि आवंटित की गई। इसी तरह अनुसूचित जाति के उद्यमियों को रियायती वित्त मुहैया कराने के उद्देश्य से एक वेंचर कैपिटल फंड की स्थापना की गई।

स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण योजना : बाबा साहेब के संविधान के दो मंत्र - 'भारतीयों की गरिमा' और 'भारत की एकता' के अनुरूप सरकार के हालिया प्रयास हैं। इसके तहत 11 करोड़ शौचालयों का निर्माण किया गया है। इसने देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कवरेज को बढ़ाकर 98 प्रतिशत कर दिया है, जो 2 अक्टूबर, 2014 को मुश्किल से 38.7 प्रतिशत था।

वंचितों तक सीधे लाभ पहुचाना : डीबीटी प्रणाली के तहत मोदी सरकार ने 8.22 लाख करोड़ रुपये सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में जमा किए हैं। यह केंद्र सरकार के कल्याण और सब्सिडी बजट का लगभग 60 प्रतिशत है। कोविड-19 के कारण लॉकडाउन के दौरान यह बेहद मददगार रहा। इससे लाखों लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा किया गया।

-भाजपा अनु.जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लाल सिंह आर्य के लेख से संकलित ●●●

किसी वंशवादी विरासत के बतौर ये 'फूल' नहीं मिले हैं भाजपा को!

दीप कमल ब्यूरो

स्थापना अधिवेशन में न्यायमूर्ति मोहम्मद करीम छागला ने भाजपा के सत्तासीन होने की भविष्यवाणी की थी।

अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा के अटल विश्वास से भारत के पश्चिमी छोर मुंबई से शुरू हुई भाजपा की स्थापना दिवस का यह 43 वां पड़ाव है। भाजपा ने अपने स्थापना के 42 वर्ष पूरे कर लिए हैं। मात्र 2 लोकसभा सदस्यों के साथ प्रारम्भ हुई भाजपा की संसदीय यात्रा आज इस पड़ाव पर 17 वें लोकसभा चुनाव आते-आते 303 सांसदों के तक पहुंची है। अब लगातार दूसरी बार भाजपा सत्ता में है। इसके अलावे 17 राज्यों में भी भाजपा (सहयोगियों समेत) की सरकारों ने वास्तव में एक इतिहास रचा है।

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के सबल नेतृत्व में भाजपा न केवल तीन दशक बाद 2014 में पूर्ण हासिल करने वाली पहली पार्टी बनी अपितु ऐसी पहली गैर कांग्रेसी दल के रूप में भी सामने आयी जिसे देश में पहली बार बहुमत मिला था। राजनीति के वैश्विक प्रेक्षकों के लिए भी विश्व की इस सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी का उद्भव और विकास किसी अचम्भा से कम नहीं है। भाजपा के पास भारतीय जनसंघ की राजनीतिक विरासत, संघ की सांस्कृतिक और हिन्दुस्थान की आध्यात्मिक विरासत थी जिसके दम पर विश्व के महानतम नेता साबित हो चुके मोदी जी ने आज भारत के पुरा वैभव की पुनर्स्थापना का स्वप्न साकार किया है। देश को फिर से विश्व गुरु के आसन पर आसीन किया है। आसान तो हालांकि नहीं था ऐसा कुछ इस तरह होना। विभिन्न कंटकाकीर्ण मार्गों से गुजरते हुए, लोकतंत्र को ख़त्म कर चुकी कांग्रेस के आपातकाल से जूझते हुए, भारत की वर्तमान (दूसरी) आज़ादी के संघर्षों से तप कर निकले नेताओं की पार्टी भाजपा के लिए यह गौरव की बात तो है ही कि जिस गैर कांग्रेसवाद का

43वें स्थापना दिवस पर कुछ तथ्य

- भाजपा विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल
- भारतीय संसद और राज्य विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व के मामले में भी भारत की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी।
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को विभिन्न वैश्विक अध्ययनों में विश्व का सार्वाधिक लोकप्रिय नेता बताया गया।
- 17 वीं लोकसभा में 303 सांसद के साथ दूसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार।
- सहयोगियों के साथ लोकसभा में 353 सीट।
- राज्यसभा में भाजपा की 94 सीटें।
- देश में लोकसभा के आधार पर (सहयोगियों के साथ) 45 प्रतिशत वोट।
- 17 राज्यों में (सहयोगियों के साथ) भाजपा सरकार।
- 18 सौ से अधिक विधायक।

असली गांधीवादी स्वप्न लिए पार्टी के मुकर्जी-दीनदयाल, अटल-आडवानी प्रभृत पुरखों ने अपना श्रेष्ठ दिया, आज वह असंभव सा दिखता सपना भी लगभग साकार हो गया है। वर्तमान चुनाव परिणामों ने न केवल पांच राज्यों से कांग्रेस का सफाया किया है अपितु उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में जहां दशकों तक कांग्रेस का एकछत्र राज रहा, वहां लगभग पौने चार सौ सीटों पर कांग्रेस का ज़मानत भी बचने लायक नहीं रहने दिया है। बंगाल जैसे प्रदेश में पूर्व सत्ताधारी कांग्रेस (और वाम दोनों) को शून्य पर समेट देना, त्रिपुरा जैसे गढ़ में कांग्रेस के वैचारिक पोषक कम्युनिस्टों की सत्ता को सीधी लड़ाई में पराजित करने समेत केंद्र में लगातार दो बार से कांग्रेस को मुख्य विपक्ष की मान्यता लायक भी नहीं रहने देना ऐसी बड़ी राजनीतिक उपलब्धि है जिसका आह्वान महात्मा गांधी भी करते रहे थे।

देश भर में लगातार बढ़ता जनाधार, उच्च सदन के 94 भाजपा सांसद, 18 सौ से अधिक विधायक समेत हज़ारों नहीं बल्कि लाखों भाजपाई जन प्रतिनिधि भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन की लोकसभा 353 सीटें, देश में पिछले लोकसभा के 31 प्रतिशत वोट शेयर से बढ़ कर इस लोकसभा में 37.36% वोट (एनडीए का 45% वोट शेयर) ने भाजपा की श्रीराम रथ यात्रा को सही अर्थों में सोमनाथ से अयोध्या वाया बाबा विश्वनाथ तक पहुचाने में कोई कसर शेष नहीं रखा है। छत्तीसगढ़ में भी विधानसभा चुनाव के मुकाबले लोकसभा में 18 प्रतिशत की मत वृद्धि हासिल कर भाजपा क्षणिक निराशा से उबर उत्साह के साथ सतत आगे बढ़ रही है।

श्री नरेंद्र मोदी-श्री अमित शाह, तदुपरांत श्री जगत प्रकाश नड्डा के सांगठनिक नेतृत्व में न केवल राजनीतिक रूप से कांग्रेस को परास्त करने में भाजपा सफल रही बल्कि कांग्रेस के तुष्टिकरण और प्रतिगामी राजनीति को भी धत्ता बताते हुए भाजपा की विकास यात्रा सतत प्रवाहमान है। भारतीय जनसंघ के समय से पार्टी के तीन कोर मुद्दों को जिसे अन्यथा भाजपा बहुमत के अभाव में सहयोगी दलों के साथ न्यूनतम साझा कार्यक्रम की विवशता में बंध भाजपा पूरे नहीं कर पा रही थी, बहुमत मिलते ही तेजी से उन सभी मुद्दों को अमल में ला कर सचमुच विश्वास को भाजपा का पर्याय बना देने में पार्टी सफल हुई है।

श्री नरेंद्र मोदी-श्री अमित शाह, तदुपरांत श्री जगत प्रकाश नड्डा के सांगठनिक नेतृत्व में न केवल राजनीतिक रूप से कांग्रेस को परास्त करने में भाजपा सफल रही बल्कि कांग्रेस के तुष्टिकरण और प्रतिगामी राजनीति को भी धत्ता बताते हुए भाजपा की विकास यात्रा सतत प्रवाहमान है।

आज इस 43 वें पड़ाव पर भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण प्रारंभ है, कश्मीर में अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी कर, 35 अ जैसे काले अध्यायों को समाप्त कर एक विधान लागू कर, त्वरित तीन तलाक को अपराध घोषित करते हुए समान नागरिक संहिता की तरफ निर्णायक कदम उठा कर वास्तव में देश के समक्ष रोड़े की तरह अटके तमाम मुद्दों का निपटारा कर दिया गया है। उल्लेखनीय यह भी है कि उत्तराखंड की भाजपा सरकार ने दुबारा सत्ता में आते ही पहली कैबिनेट बैठक में ही प्रदेश में समान नागरिक आचार संहिता लागू करने का निर्णय लिया है।

मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' को अपना मूलमंत्र बना परिश्रम की पराकाष्ठा के साथ प्रयासरत है। अपनी सभी कीर्तिमानों के स्मरण से प्रेरित भाजपा के दैव दुर्लभ कार्यकर्तागण विजय को विश्राम या मंजिल नहीं मानते हुए सतत अग्रसर हैं। वे अपनी गौरवपूर्ण उपलब्धियों के साथ नियति के समक्ष हुंकार भरते हुए यह कह सकते हैं – **ये फूल क्या मुझको विरासत में मिले हैं, तुमने मेरा कांटों भरा बिस्तर नहीं देखा।** ●●●

कांग्रेस सरकार का फेक-बजट

भाजपा नेताओं ने कहा- पुरानी और विफल योजनाओं में मामूली हेरफेर करके प्रदेश को चकमा देने की कोशिश, पुरानी बोतल पर नया लेबल लगाकर खपाने के राजनीतिक पाखंड को जनता भलीभाँति समझ रही है

भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश इकाई ने कहा है कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार का चौथा बजट लोक-लुभावन घोषणाओं का पुलिंदा है जिसमें प्रदेश की जनता को राहत देकर विकास की ठोस पहल की इच्छाशक्ति का नितांत अभाव है। पुरानी और विफल हो चलीं योजनाओं में मामूली हेरफेर करके प्रदेश को चकमा देने की कोशिश को पुरानी बोतल पर नया लेबल लगाकर खपाने की प्रदेश सरकार बाजीगरी दिखा रही है लेकिन प्रदेश की जनता इस राजनीतिक पाखंड को भलीभाँति समझ रही है। यह 'लोक-बजट' कम, 'फेक-बजट' ज़्यादा है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा कि प्रदेश सरकार के प्रस्तावित बजट में आदिवासी क्षेत्रों में पुजारियों, बैगा-गुनिया और माँझी के लिए बेहद कम राशि की घोषणा करके आदिवासी क्षेत्रों में चल रहे धर्मांतरण के कुचक्र और आदिवासियों के धर्मस्थलों व मूर्तियों के लगातार हुए और हो रहे विध्वंस से प्रदेश का ध्यान भटकाने की कोशिश की है। श्री साय ने कहा कि आदिवासियों के सर्वांगीण विकास, सम्मानजनक जीवन-स्तर और उनकी पूरी सुरक्षा को लेकर यह बजट मौन है। अपने संसाधनों से प्रदेश की राजस्व आय बढ़ाने के नाम पर प्रदेश सरकार ने ले-देकर अब विचार किया है, और इस लिहाज़ से भी रजिस्ट्री शुल्क बढ़ाकर प्रदेश की जनता पर आर्थिक बोझ लादने का ही काम किया है।

भाजपा के प्रदेश महामंत्री त्रय नारायण चंदेल, भूपेंद्रसिंह सवन्नी और किरण देव ने कहा कि अपने महज़ तीन साल के कार्यकाल में ही लगभग 51 हज़ार करोड़ रुपए के कर्ज़ के दलदल में छत्तीसगढ़ को धँसा चुकी प्रदेश सरकार का यह बजट एक बार फिर उधार के अर्थतंत्र की दिशा में प्रदेश को धकेलने वाला साबित होगा। भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष शालिनी राजपूत ने महिला सशक्तिकरण, सुरक्षा और उन्नति के समुचित व समान अवसरों के लिहाज़ से प्रदेश सरकार के बजट को पूरी तरह निराशाजनक बताया और कहा कि महिलाओं की सुरक्षा और सम्मानपूर्वक जीवनयापन की गारंटी देने में यह बजट विफल है। श्रीमती राजपूत ने कहा कि बजट भाषण में महिला स्व-सहायता समूहों के ऋण माफ़ी का ज़िक्र करने वाली प्रदेश सरकार ने इन समूहों के चलते रोज़गार को छीनने पर कोई प्रायश्चित नहीं किया है और हज़ारों समूहों से जुड़ीं महिलाएँ रेडी टू ईट का काम उनसे छीने जाने के कारण आज भी परेशान हो रही हैं। इस मुद्दे पर प्रदेश सरकार की चुप्पी बताती है कि यह सरकार महिला-विरोधी है।

भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्यामबिहारी जायसवाल ने कहा कि उत्तरप्रदेश में फूड प्रोसेसिंग यूनिट के नाम पर झूठ बोलती प्रदेश सरकार अपने चौथे बजट में भी अपने इस वादे पर ख़ामोश है और किसानों के साथ छलावा करने के अलावा और कुछ नहीं कर रही है। किसानों के साथ क़दम-क़दम पर दग़ाबाज़ी करने वाली सरकार ने किसानों को केवल त्रस्त और आत्महत्या के लिए मज़बूर ही किया है।

भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष अमित साहू ने बजट भाषण में रोज़गार के नाम पर प्रदेश को एक बार फिर ग़ुमराह करने का आरोप लगाते हुए कहा कि बजट में बेरोज़गारी भत्ते के लिए कोई प्रावधान इस वर्ष भी नहीं करने वाली और तीन साल में 5 लाख नौकरियाँ देने कर झूठी वाहवाही बटोरने का शर्मनाक उपक्रम कर रही प्रदेश सरकार बताए कि अपने पूरे कार्यकाल में 15 लाख रोज़गार मुहैया कराने का दावा वह किस आधार पर कर रही है? श्री साहू ने कहा कि व्यावसायिक परीक्षा मंडल और लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में छात्रों को परीक्षा शुल्क में छूट देने की घोषणा करके प्रदेश की युवा प्रतिभाओं को झुनझुना थमाने का काम भूपेश सरकार ने किया है।

भाजपा अजा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष नवीन मार्कण्डेय व अजजा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष विकास मरकाम ने प्रदेश सरकार के बजट को निराश करने वाला बताया। श्री मार्कण्डेय व श्री मरकाम ने कहा कि अजा-अजजा वर्ग के उत्थान की कोई ठोस परिकल्पना यह बजट नहीं दे रहा है। प्रदेश सरकार की बजट घोषणाएँ तो अधिकांशतः केंद्र सरकार के अनुदान पर निर्भर हैं और प्रदेश सरकार इन घोषणाओं पर अमल करने की अपनी ज़वाबदेही से मुँह चुराने और केंद्र सरकार के ख़िलाफ़ मिथ्या प्रलाप करने में वक़्त जाया करेगी। अजा-अजजा क्षेत्रों में बढ़ते अपराधों की रोकथाम के लिए भी ठोस प्रयासों का इरादा प्रदेश सरकार के बजट में कहीं नज़र नहीं आ रहा है।

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता व पूर्व मंत्री राजेश मूणत, केदार कश्यप के साथ ही अनुराग सिंहदेव, संजय श्रीवास्तव, नीलू शर्मा ने कहा कि अपने बजट भाषण में प्रदेश सरकार ने कोई रोडमैप नहीं दिखाया क्या होगा? भाजपा प्रवक्ताओं ने कहा कि राज्य के कर्मचारियों को केंद्र सरकार के समान महंगाई भत्ते पर मौन साधकर अपने कर्मचारी विरोधी रवैए का परिचय दिया है। आर्थिक कंगाली के मुहाने पर प्रदेश को ला खड़ा करने वाली प्रदेश सरकार ने विकास का कोई विज़न पेश करने के बजाय नए काम और योजनाओं की घोषणाएँ करते हुए यह बताने की ज़रूरत नहीं समझी कि इनके लिए वह राशि कहाँ से जुटाएगी? ●●●

विधानसभा चुनावों में खिला कमल

उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मणिपुर एवं गोवा में भाजपा की जोरदार वापसी

सामान्य तौर पर सत्ताधारी पार्टी का दोबारा सत्ता में आना कठिन रहता है। सत्ता विरोधी लहर की संभावना रहती है, लेकिन गत 10 मार्च को आए पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम से स्पष्ट हुआ कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार इन चार राज्यों में जनता पुनः चाहती है। ऐसा इसलिए हुआ कि भाजपा सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों से जनता का हित सुनिश्चित हो रहा है और वे लगातार भाजपा के प्रति अपना भरोसा जता रहे हैं। पीएम श्री नरेन्द्र मोदी के यशस्वी नेतृत्व में जन-जन का विकास हो रहा है और मजबूत भारत का सपना साकार हो रहा है।

भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मणिपुर एवं गोवा विधानसभा चुनावों में अपनी सरकार बरकरार रखते हुए जीत का परचम लहराया। भाजपा को इन चुनावों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपानीत राजग सरकार की निःशुल्क गैस कनेक्शन, प्रधानमंत्री आवास योजना, किसान सम्मान निधि, आयुष्मान भारत योजना, कोरोना संकट में निःशुल्क टीका एवं निःशुल्क राशन वितरण जैसी योजनाओं से लाभार्थी लोगों का सहयोग मिला, तो वहीं भाजपानीत राज्य सरकारों में बेहतर कानून व्यवस्था और भ्रष्टाचार मुक्त शासन के चलते लोगों का समर्थन प्राप्त हुआ। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा के कुशल नेतृत्व में कोरोना काल में निरंतर 'सेवा ही संगठन' अभियान एवं अन्य संगठनात्मक गतिविधियों से मजबूत संगठन का भी लाभ मिला। मतदाताओं ने जातिवाद और परिवारवाद से ऊपर उठकर राष्ट्रवाद और विकासवाद के पक्ष में मतदान किया।

इन चुनावों में सबसे करारी हार कांग्रेस की हुई, जिसे पंजाब में न सिर्फ अपनी सत्ता गंवानी पड़ी, बल्कि अन्य राज्योंमें भी उसकी दुर्गति हुई।

उत्तर प्रदेश

भाजपा की लगातार दूसरी बार ऐतिहासिक जीत

कुल 403 सदस्यीय उत्तर प्रदेश विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी ने अपने सहयोगी दलों के साथ 273 सीटें जीतकर दो तिहाई बहुमत प्राप्त किया। भाजपा ने 37 साल पुराने इतिहास को तोड़ते हुए लगातार दोबारा जीत दर्ज की।

भाजपा ने 255 सीटों पर शानदार विजय प्राप्त की। उसकी सहयोगी पार्टी अपना दल (सोनेलाल) ने 12 सीटों पर जीत दर्ज कर प्रदेश में तीसरे सबसे बड़े दल के रूप में अपनी जगह बनाई, जबकि निर्बल इंडियन शोषित हमारा आम दल (निषाद) ने भी छह सीटोंपर जीत हासिल की।

समाजवादी पार्टी गठबंधन को कुल 125 सीटें हासिल हुईं, जिनमें से 111 सीटें सपा को मिलीं। उसकी सहयोगी पार्टी राष्ट्रीय लोक दल को 8 एवं सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी को 6 सीटें मिलीं। कांग्रेस और बसपा का तो बहुत बुरा हाल हुआ। कांग्रेस और जनसत्ता दल लोकतांत्रिक को 2-2 और बसपा को 1 सीट से संतोष करना पड़ा। मत प्रतिशत की बात करें तो भाजपा को सर्वाधिक 41.29 प्रतिशत मिले, जबकि सपा को 32.06 प्रतिशत, बसपा को 12.88 प्रतिशत, आरएलडी को 2.85 प्रतिशत एवं कांग्रेस को 2.33 प्रतिशत मत मिले।

विजय के पश्चात् मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ स्थित पार्टी मुख्यालय में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, जनता एवं कार्यकर्ताओं का आभार जताया। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चार राज्यों में भाजपा की प्रचंड बहुमत की सरकार बनने जा रही है। इन चार राज्यों में प्रधानमंत्री के विकास और सुशासन को जनता ने फिर से आशीर्वाद दिया है। उन्होंने कहा, 'यह प्रचंड बहुमत भाजपा के राष्ट्रवाद, विकास और सुशासन के मॉडल को उत्तर प्रदेश की 25 करोड़ जनता का आशीर्वाद है। इस आशीर्वाद को स्वीकार करते हुए हमें लोगों की आकांक्षाओं के अनुरूप 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबके प्रयास' को आगे बढ़ाना होगा।'

उत्तराखंड

दूसरी बार सत्ता में आने वाली पहली पार्टी

उत्तराखंड की कुल 70 सीटों में से भारतीय जनता पार्टी ने 47 सीटों पर विजय प्राप्त कर जीत का परचम लहराया, जबकि कांग्रेस को 19 सीटें मिलीं। यहां बसपा और निर्दलीय को दो-दो सीटें मिलीं। भाजपा को सर्वाधिक 44.33 प्रतिशत मत मिले, वहीं कांग्रेस को 37.91 प्रतिशत और बसपा को 4.82 प्रतिशत मत मिले। भाजपा उत्तराखंड में लगातार दूसरी बार विधानसभा चुनाव जीतने वाली पहली पार्टी बन गई है। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने ट्वीट कर कहा कि यह जीत हमारे प्रधानमंत्री आदरणीय मोदी जी के प्रति भरोसे की जीत है, यह जीत हमारी सरकार द्वारा किए गए विकासोन्मुखी कार्यों की जीत है और यह जीत उत्तराखंड की जनता की जीत है। देवभूमि के समग्र विकास हेतु हमने जो आधारशिला रखी है उसका परिणाम आने वाले समय में दिखने लगेगा। उन्होंने कहा कि आज भाजपा प्रदेश कार्यालय में यह जश्न पुनः उत्तराखण्ड में राष्ट्रवाद और विकासवाद की जीत का है, देवभूमि की देवतुल्य जनता एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

गोवा

जीत की हैट्रिक

गोवा की 40 सदस्यीय विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी ने 20 सीटों पर विजय प्राप्त की। कांग्रेस को 11 और उसके सहयोगी दल गोवा फॉरवर्ड पार्टी (जीएफपी) को एक सीट मिली। महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी और आम आदमी पार्टी ने दो-दो सीटें प्राप्त की। रेवोलुशनरी गोवन्स पार्टी को एक और निर्दलीय को 3 सीटें मिलीं। मत प्रतिशत की बात करें तो भाजपा को सर्वाधिक 33.31 प्रतिशत मिले, वहीं कांग्रेस को 23.46 प्रतिशत, एमएजी को 7.60 प्रतिशत, एएएपी को 6.77 प्रतिशत और एआईटीसी को 5.21 प्रतिशत मत मिले। यहां भाजपा हैट्रिक बनाते हुए लगातार तीसरी बार सरकार बनाने जा रही है।

सभी पांच राज्यों में बनेगी कांग्रेस की सरकारः मरकाम

रायपुर | निर्वाचन आयोग द्वारा पांच राज्यों में आम चुनाव के ऐलान के बाद पीसीसी अध्यक्ष मोहन मरकाम ने दावा किया है कि सभी में कांग्रेस की सरकार बनेगी। मरकाम

डींगें हांकना, गाल बजाना इसे ही कहते हैं

मणिपुर

फिर से जय, हाथ साफ

मणिपुर विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को पूर्ण बहुमत मिला। कुल 60 विधानसभा सीटों में से भाजपा ने 32 सीटों पर विजय प्राप्त की। कांग्रेस अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन करते हुए सिर्फ 5 सीटों पर सिमट गई। जनता दल (यूनाइटेड) को 6 और नेशनल पीपुल्स पार्टी को 7 सीटें मिलीं। नगा पीपुल्स फ्रंट और कांग्रेस को 5-5 सीटें मिलीं। 2 सीटों पर कूकी पीपुल्स एलायंस और तीन सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवारों ने जीत हासिल की। भाजपा को सर्वाधिक 37.83 प्रतिशत मिले, वहीं कांग्रेस को 16.83 प्रतिशत, जेडी(यू) को 10.77, एनपीईपी को 17.29 एवं एनपीएफ को 8.09 प्रतिशत मत मिले।

असम के विधानसभा उपचुनाव और निकाय चुनाव में भी शानदार जीत

जीत की इसी निरंतरता में भाजपा ने विधानसभा चुनाव परिणाम से पहले मां कामाख्या की भूमि से भी सुखद समाचार प्राप्त हुआ। असं के नगर निकाय चुनाव में भाजपा ने 80 में से 75 निकायों पर शानदार जीत दर्ज की। जबकि भाजपा गठबंधन ने कुल 77 नगर निकायों पर जीत हासिल की। राज्य में प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस, केवल एक नगर निकाय जीतने में सफल रही, जबकि निर्दलीय समेत अन्य ने दो निकाय जीते। भाजपा ने 742 वार्ड समेत अपने सहयोगियों के साथ मिलकर कुल 807 पर जीत हासिल की। वहां भी कांग्रेस का लगभग सफाया हो गया। उससे अधिक वार्ड में पर निर्दलियों ने जीत प्राप्त की। इसी प्रकार असम के माजुली (एसटी) विधानसभा पर भी भाजपा का विजय अभियान जारी रहा। वहां भाजपा प्रत्याशी श्री भुबन गम ने अगप के संयुक्त विपक्षी प्रत्याशी चित्तरंजन बसुमतारी को 42 हज़ार से अधिक मतों से पराजित किया। कांग्रेस इस विधानसभा सीट पर अपने प्रत्याशी देने का भी साहस नहीं कर पायी।

जनार्दन की तरह जनता की लाठी भी बेआवाज होती है।

लखीमपुर में ही कथित किसान आंदोलन था, जहां मुख्यमंत्री भूपेश बघेल छग की गरीब जनता के हक का निवाला छीनकर वहां करोड़ों लुटा आए थे।

और इधर

पहले खैरागढ़, फिर सारा छत्तीसगढ़...

कोमल खिलायेंगे खैरागढ़ में कमल

छत्तीसगढ़ के खैरागढ़ विधानसभा क्षेत्र के लिए घोषित उपचुनाव में पार्टी ने क्षेत्र के लोकप्रिय नेता, पूर्व बिधायक श्री कोमल जंघेल को प्रत्याशी बनाया है। यह सीट स्थानीय विधायक के निधन के कारण खाली हुई थी। विगत चुनाव में इस सीट से श्री जंघेल जहां 800 वोटों के मामूली अंतर से चुनाव हारे थे वहीं कांग्रेस यहां तीसरे स्थान पर रही थी। इससे पहले भी खैरागढ़ में हुए उपचुनाव में श्री जंघेल ने कांग्रेस के दांत खट्टे किये थे। उन्होंने उपचुनाव और आम चुनाव दोनों में कांग्रेस को वहां से पहले भी पराजित किया है। प्रदेश भाजपाध्यक्ष श्री विष्णुदेव साय ने पूर्ण विश्वास व्यक्त किया है कि श्री कोमल खैरागढ़ में फिर से कमल खिलायेंगे ही। श्री साय ने कहा कि भाजपा के सभी कार्यकर्ता कोमल जंघेल के रूप में यह उपचुनाव लड़ेंगे और स्वप्नजीवी भूपेश बघेल को यूपी याद आ जायेगी। उन्होंने कहा कि पांच राज्यों की जनता कांग्रेस को आईना दिखा चुकी है। अब इस उपचुनाव में खैरागढ़ की जनता छत्तीसगढ़ के संसाधनों को अपनी कुर्सी बचाने के लिए यूपी, उत्तराखंड में झोंकने वाले भूपेश बघेल को सबक सिखायेगी। राज्य की जनता तीन साल से भूपेश बघेल और कांग्रेस की अन्यायी सरकार के विश्वासघात का दंश भोग रही है। खैरागढ़ की जनता छत्तीसगढ़ की जनता की भावनाओं के अनुरूप जनादेश देकर इनके अहंकार को मिटा देगी। उन्होंने कहा कि खैरागढ़ की जनता से निवेदन किया है कि वह वंश विशेष की चाटुकारिता के लिए छत्तीसगढ़ का दोहन करने में लगी कांग्रेस सरकार के मुखिया को उनकी कुटिल राजनीति का समुचित जवाब दे।

■ कोमल जंघेल

छग भाजपा में उत्साह दुगना क्योंकि :-

यूपी में फूट गया शहजादे, शहजादी के साथ 'गुलाम' का भी गुब्बारा

छत्तीसगढ़ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने उत्तर प्रदेश चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत पर जनता के प्रति विनम्र आभार व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं पार्टी के समर्पित कार्यकर्ताओं को बधाई देते हुए कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, यूपी प्रभारी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा और वहां के कांग्रेसी स्टार प्रचारक, कथित ऑब्जर्वर तथा छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर जमकर तंज कसा। श्री साय ने कहा कि यूपी में कांग्रेस के शहजादे, शहजादी और गुलाम का गुब्बारा फूट गया। मोदी जी का नाम, योगी जी का काम उत्तर प्रदेश में भरपूर असर कर गया और जनता ने बड़बोलों का काम तमाम कर दिया।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अपनी कुर्सी बचाने के लिए प्रियंका से यूपी चुनाव की जिम्मेदारी मांगी थी। उन्होंने छत्तीसगढ़ के संसाधन यूपी में झोंक दिये। यहां से हर तरह से वसूली करके चुनाव फंड का इंतजाम किया। छत्तीसगढ़ के हितों और किसानों सहित आम जनता को भगवान भरोसे छोड़ कर यूपी में डेरा डाल कर शहजादी के ओएसडी की भूमिका निभाई।

छत्तीसगढ़ मॉडल के नाम पर शहजादे से झूठ परोसवाने में अपनी महारत का परिचय दिया और यहां आकर ऐसे ऐसे दावे किए कि जैसे यूपी में उनका मॉडल कांग्रेस को सत्ता में ला ही देगा। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की झूठ फरेब की राजनीति को यूपी की जनता ने आइना दिखा दिया है। पाने के लिए सब कुछ है, यह सपना देखने वाले भूपेश बघेल के दिल के अरमां आंसुओं में बह गए। भाजपा को औकात दिखाने का दुस्साहस करने वाले को अब अपनी औकात पता चल गई है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की पूरी तरह दुर्गति होने में भूपेश बघेल की कलाकारी का मुख्य योगदान है। भूपेश बघेल ने के झूठ के झांसे में राहुल-प्रियंका आ गए और बघेल के कथित मॉडल को घोषणा पत्र में शामिल किया। जनता झांसे में नहीं आई।

अपनी विफलता पर शर्म महसूस कर बघेल तुरंत इस्तीफ़ा दें : मूणत

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता व पूर्व मंत्री राजेश मूणत ने कहा कि धर्म, जाति, पंथ, क्षेत्र से ऊपर उठकर

जनता ने विकास के नाम पर वोट किया। भाजपा ने यादव, जाट, मुस्लिम के नाम से बांटने वाली ताक़तों को क़रारा ज़वाब दिया। उन्होंने आज फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यों और प्रखर नेतृत्व पर जनता ने अपने विश्वास की मुहर लगाई है। श्री मूणत ने कहा कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बड़बोलेपन और झूठे प्रचार को भी मुँहतोड़ ज़वाब दिया है और छत्तीसगढ़ मॉडल के नाम पर इठलाते मुख्यमंत्री बघेल अब उत्तरप्रदेश की जनता द्वारा छत्तीसगढ़ मॉडल की लफ़्फ़ाज़ी को नकार देने के बाद अपनी विफलता पर शर्म महसूस कर तुरंत मुख्यमंत्री पद से इस्तीफ़ा दें। योगी जी का मठ लौटना तय बताने वाले बघेल अपना राजनीतिक वनवास कहां गुजारेंगे?

लड़ना-लड़ाना कांग्रेस का राजनीतिक चरित्र है : शालिनी

भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष शालिनी राजपूत ने महिला सशक्तिकरण, सुरक्षा और उन्नति के

समुचित व समान अवसरों के लिहाज़ से उत्तरप्रदेश समेत चार राज्यों में भाजपा की सत्ता में वापसी एक ऐतिहासिक संदेश और संकेत देने वाली है। श्रीमती राजपूत ने कहा कि भाजपा शासित प्रदेशों में महिलाओं के सर्वांगीण विकास के अवसर, हर स्तर पर सुरक्षा की गारंटी और तीन तलाक़ क़ानून ने महिलाओं में भाजपा के प्रति विश्वास को बढ़ाया है और यही कारण है कि उत्तरप्रदेश में कुल मतदान में महिलाओं की हिस्सेदारी पुरुष मतदाताओं के मुक़ाबले 11-12 फ़ीसदी ज़्यादा रही जो भाजपा के प्रति महिलाओं के अगाध विश्वास का प्रतीक है। 'लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ' के सियासी जुमले का दम तोड़कर महिलाओं ने यह साफ़ कर दिया है कि लड़ना-लड़ाना कांग्रेस का राजनीतिक चरित्र है।

'छत्तीसगढ़ के भाजपा नेताओं की औक़ात नापने वाले बघेल की औक़ात नाप ली गयी, 2023 में छत्तीसगढ़ की जनता भी नापेगी'

भाजपा प्रदेश प्रवक्ताओं अनुराग सिंहदेव तथा संजय श्रीवास्तव ने कहा कि छत्तीसगढ़ के भाजपा नेताओं की औक़ात नापकर अपने सत्तावादी अहंकार

का प्रदर्शन करने वाले मुख्यमंत्री बघेल की औक़ात अभी तो उत्तरप्रदेश की जनता ने अपने जनादेश में नापी है, 2023 में छत्तीसगढ़ की जनता भी सत्ता-मद में चूर मुख्यमंत्री बघेल समेत कांग्रेस के नेताओं की औक़ात नापेगी। भाजपा प्रवक्ताओं ने कहा कि लगातार झूठे दावों और छत्तीसगढ़ मॉडल का ढोल पीटकर भी कांग्रेस के लोग उत्तरप्रदेश समेत सभी पाँच राज्यों में मुँह की खा चुके हैं और भविष्य में भी कांग्रेस अपने राजनीतिक वजूद के लिए छटपटाती ही नज़र आएगी।

परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर दो सांसदों वाली भाजपा आज सबसे बड़ी पार्टी

भाजपा के प्रदेश महामंत्री त्रय नारायण चंदेल, भूपेंद्रसिंह सवन्नी और किरण देव ने कहा कि भाजपा ने भारतीय राजनीति की दशा और दिशा में जो सकारात्मक

बदलाव लाया है, उसी का नतीजा है कि भाजपा अपने बेहतर प्रदर्शन के सहारे लगातार जन-विश्वास अर्जित कर सत्ता में वापसी कर रही है। ये चुनाव नतीजे भाजपा के लिए उत्साहजनक हैं और भाजपा जनादेश को पूरे विनम्र भाव से शिरोधार्य करती है। पंजाब में पार्टी का प्रदर्शन अपेक्षानुरूप नहीं होने पर भाजपा महामंत्रियों ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता न जीत में मस्त होते हैं और न ही हार में पस्त होते हैं।

आत्मनिर्भर राष्ट्र के संकल्प में विश्वास मजबूत : अमित

भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष अमित साहू ने कहा कि उत्तरप्रदेश में भाजपा की जीत ने साफ़ कर दिया है युवाओं के साथ कांग्रेस द्वारा किए जा रहे छलावों के दिन लद गए हैं। रोज़गार के नाम पर युवाओं को ग़ुमराह करने वाली कांग्रेस समेत विरोधी दलों को क़रारी शिक़स्त देकर तरुणाई ने अपनी प्रतिभा के सम्मान, रोज़गार के निजी विकल्पों के साथ आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण का विश्वास भाजपा में व्यक्त किया है। शिक्षा और रोज़गार के नाम पर सियासी प्रलाप करने वाले भाजपा विरोधी दलों को युवा वर्ग ने साफ़-साफ़ जता दिया है कि यह काम भाजपा की सरकारें बेहतर ढंग से कर रही हैं और उनका अटूट विश्वास भाजपा पर है। ●●●

यह भव्य विजय भारत के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी है

नरेन्द्र मोदी

विधानसभा के इस चुनाव में हिस्सा लेने वाले सभी मतदाताओं को हार्दिक बधाई। यह उत्सव भारत के लोकतंत्र के लिए है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में भारतीय जनता पार्टी को मिली ऐतिहासिक विजय वास्तव में जनता और लोकतंत्र की जीत है। इन प्रदेशों की हमारी माताओं, बहनों और युवाओं ने जिस तरह भारतीय जनता पार्टी को भरपूर समर्थन दिया है, वह अपने आप में बहुत बड़ा संकेत है। यह भी संतोष की बात है कि पहली बार मत दे रहे युवाओं ने बढ़-चढ़ कर मतदान में हिस्सा लिया और भाजपा की जीत पक्की की। चुनाव के दौरान भाजपा के कार्यकर्ताओं ने मुझे आश्वस्त किया था कि इस बार होली 10 मार्च से ही शुरू हो जाएगी। हमारे कार्यकर्ताओं ने चारों प्रदेश में भाजपा का ये विजय ध्वज फहराकर इस वचन को पूरा कर दिखाया। मैं पार्टी के उन सभी कार्यकर्ताओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं जिन्होंने दिन-रात देखे बिना इन चुनावों में काम किया और जनता का विश्वास जीतने में सफल रहे। कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करने और भाजपा की विजय यात्रा को सुनिश्चित करने हेतु हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी का भी हार्दिक अभिनंदन।

उत्तर प्रदेश में आज हमारे कार्यकर्ताओं ने जीत का चौका लगाया है। उत्तर प्रदेश ने देश को अनेक प्रधानमंत्री दिए थे, लेकिन 5 साल का कार्यकाल पूरा करने वाले किसी मुख्यमंत्री के दोबारा चुने जाने का ये पहला उदाहरण है। उत्तर प्रदेश में 37 साल बाद कोई सरकार लगातार दूसरी बार सत्ता में आई है। तीन राज्यों यूपी, गोवा और मणिपुर में सरकार में होने के बावजूद भाजपा के वोट शेयर में वृद्धि हुई है। गोवा की जनता ने हमें फिर से सेवा का अवसर दिया। 10 साल सत्ता में रहने के बाद भी गोवा में भाजपा की सीटें बढ़ी हैं। उत्तराखंड में भी भारतीय जनता पार्टी ने नया इतिहास रचा है। देवभूमि में पहली बार कोई पार्टी लगातार दूसरी बार सत्ता में आई है। सीमा से सटा एक पहाड़ी राज्य (उत्तराखंड), एक समुद्र तटीय राज्य (गोवा), एक मां गंगा का विशेष आशीर्वाद प्राप्त राज्य (उत्तर प्रदेश) और पूर्वोत्तर सीमा पर एक राज्य (मणिपुर) भाजपा को चारों दिशाओं से आशीर्वाद मिला है। इन राज्यों की चुनौतियां भिन्न हैं। सबकी विकास की यात्रा का मार्ग भिन्न है, लेकिन एक सूत्र जो उभयनिष्ठ है, वह है— भाजपा पर विश्वास, भाजपा की नीति, भाजपा की नीयत और भाजपा के निर्णयों पर अपार विश्वास। ये परिणाम भाजपा की प्रो-पुअर, प्रो-एक्टिव गवर्नेंस पर एक प्रकार से बड़ी मुहर है।

हमने देश भर में और प्रदेशों में जहां-जहां भाजपा की सरकारें हैं, वहां गवर्नेंस डिलिवरी सिस्टम बेहतर किया। मैं गरीब के घर तक उसका हक पहुंचाए बिना चैन से बैठने वाला इंसान नहीं हूं। सरकार और गवर्नेंस में कितनी दिक्कतें होती हैं, इसे जानता हूं।

हमने देश भर में और जहां-जहां भाजपा की सरकारें हैं, वहां गवर्नेंस डिलिवरी सिस्टम बेहतर किया। मैं गरीब के घर तक उसका हक पहुंचाए बिना चैन से बैठने वाला इंसान नहीं हूं। सरकार और गवर्नेंस में कितनी दिक्कतें होती हैं, इसे जानता हूं। हर गरीब तक सरकार की योजनाओं को सौ फीसदी तक पहुंचाने का हमने संकल्प लिया। जब ईमानदारी होती है, नीयत साफ होती है, गरीबों के लिए करुणा होती है, देश के कल्याण का मंत्र होता है तो ऐसी हिम्मत पैदा होती है। मैं महिलाओं, बहन, बेटियों को विशेष रूप से नमन करता हूं। चुनाव में उनका

बड़ा योगदान रहा है। ये हमारा सौभाग्य है कि भाजपा को बहनों, बेटियों और माताओं ने इतना स्नेह दिया, इतना आशीर्वाद मिला है। जहां-जहां महिला मतदाताओं ने पुरुषों के मुकाबले ज्यादा मतदान किया है, वहां भारतीय जनता पार्टी को बंपर जीत मिली है। हमारी माताएं, बहनें, बेटियां, स्त्री शक्ति भाजपा की जीत की साक्षी बनी हैं।

सभी तथाकथित राजनीतिक पंडितों से यह आग्रह है कि देश की भलाई के लिए पुरानी घिसी-पिटी चीजें छोड़कर नई चीजें सोचना शुरू कीजिए। ये ज्ञानी लोग यूपी की जनता को सिर्फ और सिर्फ जातिवाद के तराजू से तौलते थे और उसी दृष्टि से देखते थे। उत्तर प्रदेश के नागरिकों को जातिवाद की बाड़ेबंदी में बांधकर नागरिकों और उत्तर प्रदेश का अपमान करते थे। कुछ लोग यूपी को यह कहकर बदनाम करते हैं कि यूपी में जाति ही चलती है। 2014, 2017, 2019 और अब 2022 - हर बार उत्तर प्रदेश की जनता ने सिर्फ विकासवाद की राजनीति को ही चुना है। यूपी की जनता ने इन लोगों को ये सबक दिया है। ये सबक उन्हें सीखना होगा। उत्तर प्रदेश के हर नागरिक ने ये सबक दिया है कि जाति की गरिमा, जाति का मान, देश को जोड़ने के लिए होना चाहिए, तोड़ने के लिए नहीं। ये चार-चार चुनावों में हमने करके दिखाया है। 2019 के चुनाव नतीजों के बाद कुछ पॉलिटिकल ज्ञानियों ने कहा था कि 2019 की जीत में क्या है, ये तो 2017 में ही तय हो गई थी, क्योंकि 2017 में यूपी का रिजल्ट आया था। मैं मानता हूं कि इस बार भी ये ज्ञानी जरूर कहने की हिम्मत करेंगे कि 2022 के नतीजों ने 2024 के नतीजे तय कर दिए हैं। देश में जहां-जहां डबल इंजन की सरकार रही, वहां पर जनता के हितों की सुरक्षा हुई।

पंजाब के भाजपा कार्यकर्ताओं ने भी विशेष प्रशंसा लायक कार्य किया है। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी जिस प्रकार पार्टी का झंडा बुलंद किया है, वो आने वाले समय में पंजाब में भाजपा की मजबूती और देश की मजबूती को विकसित करने में सहायक होगा। पंजाब में भाजपा एक शक्ति के रूप में उभरी है, यह प्रत्यक्ष दिख रहा है। सीमावर्ती राज्य होने के नाते उस राज्य को अलगाववादी राजनीति से सतर्क रखना भाजपा का कार्यकर्ता जान की बाजी लगाकर करेगा। आने वाले 5 सालों में भाजपा का हर कार्यकर्ता वहां इस दायित्व को जोर-शोर से निभाने वाला है, ये विश्वास मैं पंजाब की जनता को भाजपा देती है।

यह चुनाव ऐसे समय में हुए हैं, जब पूरी दुनिया 100 साल की सबसे बड़ी कोरोना महामारी से लड़ रही है। युद्ध ने भी विश्व की चिंताएं बढ़ाई हैं। इन परिस्थितियों में दुनिया भर में सप्लाई चेन प्रभावित हुई हैं। इन चुनौतियों

से निपटने के लिए भारत ने जो कदम उठाए, आर्थिक स्तर पर जो फैसले लिए, गरीब कल्याण के जो फैसले लिए, उससे भारत को संभलकर आगे बढ़ने में बहुत मदद मिली है। भारत इससे बच पाया है इसलिए, क्योंकि हमारी नीतियां जमीन से जुड़ी रहीं। हमारे प्रयास निष्ठा और नीयत की पटरी पर अविरत आगे बढ़ते रहे। जो युद्ध चल रहा है, उसका प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से दुनिया के हर देश पर पड़ रहा है। भारत शांति के पक्ष में है। बातचीत से हर समस्या को सुलझाने के पक्ष में है, जो देश सीधे जंग लड़ रहे हैं, भारत का उनसे आर्थिक, सुरक्षा, शिक्षा, राजनीतिक दृष्टि से नाता है। भारत की बहुत सारी जरूरतें इन देशों से जुड़ी हुई हैं। उत्तर प्रदेश जैसे राज्य ने अपनी दूरदृष्टि का परिचय दिया है। भारत के मतदाताओं ने जिस तरह इन चुनावों में स्थिर सरकारों के लिए वोट दिया, वह इस बात का प्रतीक है कि लोकतंत्र भारतीयों की रगों में है।

अपने भाइयों और बहनों के समक्ष इस चुनाव परिणाम के अवसर पर मैं देश के सामने अपनी कुछ चिंताएं भी रखना चाहता हूं। देश के नागरिक राष्ट्र निर्माण में जुटे हैं, लेकिन हमारे यहां कुछ लोग लगातार राजनीति का स्तर गिराते जा रहे हैं। कोरोना के इस समय में भी हमने देखा है कि लोगों ने देशवासियों को गुमराह करने की लगातार कोशिश की है। टीकाकरण के हमारे प्रयासों की दुनिया प्रशंसा कर रही है, लेकिन इस पवित्र और मानवता के कार्य पर और भारत की टीका पर भी सवाल उठाए गए। जब यूक्रेन में हजारों भारतीय छात्र और नागरिक फंसे हुए थे, तब भी देश का मनोबल तोड़ने की बातें हो रही थीं। जो वहां फंसे थे, उनकी चिंता बढ़ाने का काम हो रहा था। ये लोग उन बच्चों में असुरक्षा की भावना बढ़ा रहे थे। इन लोगों ने ऑपरेशन गंगा को भी प्रदेशवाद की बेड़ियों में बांधने की कोशिश की। हर योजना, हर काम को क्षेत्रवाद, प्रदेशवाद, जातिवाद का रंग देने का प्रयास भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए चिंता का विषय है।

इस चुनाव में भी भाजपा ने लगातार विकास की बात की है। गरीबों को घर, गरीबों को राशन, टीका, आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर हर विषय पर भाजपा का विजन लोगों के सामने रखा है। अपनी जिस बात पर सबसे ज्यादा चिंता थी, वो थी परिवारवाद। मैंने लोगों को बताया कि मैं परिवार के खिलाफ नहीं, किसी विशेष का विरोधी नहीं। कैसे परिवारवाद ने राज्य का कितना नुकसान किया है और राज्य को पीछे ले गए। इस बात को मतदाताओं ने समझते हुए भी इस चुनाव में अपना वोट दिया है। लोकतंत्र की ताकत को मजबूत किया है। जिन मुद्दों को उठा रहा हूं, उस पर बहस होना जरूरी है। एक न एक दिन ऐसा आएगा, जब भारत के नागरिक परिवारवादी राजनीति का सूर्यास्त नागरिक करके रहेंगे। इस चुनाव में देश के मतदाताओं ने अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिखाते हुए, क्या होने वाला है, इसका इशारा कर दिया है।

एक और विषय ध्यान देने लायक है, और वह है भ्रष्टाचार के खिलाफ एक्शन रोकने की साजिश। हमारे देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों में एक नफरत का भाव रहता है। देश की गाढ़ी कमाई लूटकर तिजोरी भरने की प्रवृत्ति कुछ लोगों की पहचान के साथ जुड़ गई है।

एक और विषय ध्यान देने लायक है, और वह है भ्रष्टाचार के खिलाफ एक्शन रोकने की साजिश। हमारे देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों में एक नफरत का भाव रहता है। देश की गाढ़ी कमाई लूटकर तिजोरी भरने की प्रवृत्ति कुछ लोगों की पहचान के साथ जुड़ गई है। आजकल एक जमात की एक प्रवृत्ति बन गई है कि पहले हजारों करोड़ रुपए का भ्रष्टाचार करते हैं, फिर जांच भी नहीं होने देते, जांच हो तो उस पर दबाव बनाते हैं। ये लोग किसी भ्रष्टाचारी पर कार्रवाई होते ही उसे धर्म का रंग देते हैं, प्रदेश का रंग दे देते हैं, जाति का रंग दे देते हैं। ये नए तरीके शुरू हुए हैं। किसी माफिया के खिलाफ अदालत कोई फैसला सुना देती है तो भी ये लोग उसे धर्म से जोड़ देते हैं। मैं भारत के सभी संप्रदायों, जातियों पर गर्व करने वाले ईमानदारों से आग्रह करता हूं कि ऐसे भ्रष्टाचारियों, माफियाओं को अपने समाज, संप्रदाय और जाति से दूर करने की हिम्मत करें। इससे समाज भी मजबूत होगा, संप्रदाय भी मजबूत होगा। मैं बनारस का सांसद हूं। यूपी के लोगों के प्यार और आशीर्वाद से मुझे भी यूपी वाला बना दिया। बनारस का सांसद होने के नाते अनुभव से कह सकता हूं कि यूपी के लोग समझ चुके हैं कि जाति को बदनाम करने वालों से दूर रहना है और राज्य के विकास को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देनी है।

भारत आजादी के अमृतकाल में प्रवेश कर रहा है। ये चुनाव हमारे राष्ट्रीय संकल्पों को प्रतिबिंबित करते हैं। यहां से हम एकसाथ तेजी से काम करने वाले हैं। एक तरफ गांव, गरीब, छोटे किसानों के कल्याण पर हमारा जोर है, वहीं दूसरी ओर हम देश के संसाधनों, युवा शक्ति को नए अवसर देकर हम आत्मनिर्भरता के मिशन को तेज करना चाहते हैं। भारत का युवा आज तक अपने हुनर से, बुद्धि के बल से और क्षमता के उपयोग से दुनिया को समाधान दे रहा है। दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे तेज टीकाकरण अभियान आज के भारत के सामर्थ्य का बड़ा उदाहरण है। आज भारत डिजिटल पेमेंट सिस्टम में आत्मनिर्भर हो रहा है। स्टार्टअप के क्षेत्र में अपना सामर्थ्य बढ़ा रहा है और तकनीक के क्षेत्र में नई उपलब्धियां प्राप्त कर रहा है। ये युवा शक्ति की वजह से हो रहा है। आज ऐसे नए भारत का निर्माण हो रहा है, जहां आपकी पहचान आपसे होती है। मुझे विश्वास है कि सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र पर चलते हुए हम अपने-अपने राज्यों को नई ऊंचाई पर लेकर जाएंगे। जब देश के हर राज्य का विकास होगा तो देश का भी विकास होगा। बड़े संकल्पों और इरादों के साथ देश को आगे बढ़ाना है।

भाजपा की इतनी बड़ी और भव्य विजय भारत के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी है। इस गारंटी के लिए निर्णायक मतदान करने वाले मतदाताओं का हार्दिक अभिनंदन, अशेष धन्यवाद।

चुनाव परिणाम के बाद भाजपा मुख्यालय में आयोजित समारोह में मोदी जी के उद्बोधन का आलेख रूपान्तर। ●●●

चुनाव मैथेमेटिक्स का नहीं, केमिस्ट्री का विषय है

जगत प्रकाश नड्डा

विधान सभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को मिली एकतरफा जीत के महानायक यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी हैं। मोदी जी के नेतृत्व में परिश्रम की पराकाष्ठा करने वाले पार्टी के दैव दुर्लभ कार्यकर्ताओं को इस जीत का श्रेय जाता है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर के विधान सभा चुनाव के नतीजे एकतरफा भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में आये हैं। देश भर में जारी भाजपा की विजय यात्रा के क्रम में इतनी बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता अपने लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का स्वागत एवं अभिनंदन करने आये थे। करोड़ों पार्टी कार्यकर्ताओं और मेरी ओर से भी आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का हार्दिक अभिनंदन, उनका हृदय की गहराइयों से स्वागत।

इस चुनाव में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में जिस तरह से जनता ने एकजुट होकर भारतीय जनता पार्टी को प्रचंड बहुमत दिया है, वह यह दर्शाता है कि महान जनता ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गरीब कल्याण नीतियों, कार्यक्रमों एवं उनके निर्णयों पर मुहर लगाई है। सभी मतदाताओं का हार्दिक धन्यवाद। भाजपा की ये प्रचंड विजय इस बात का द्योतक है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश की राजनीति किस तरह आगे बढ़ रही है।

उत्तर प्रदेश में भाजपा की लगातार दूसरी बार ऐतिहासिक जीत उल्लेखनीय है। यूपी में पहली बार लगातार चार बार 2014 के लोक सभा चुनाव, 2017 के विधान सभा चुनाव, 2019 के लोक सभा चुनाव और आज 2022 के विधान सभा चुनाव के परिणाम में भाजपा को वहां की जनता ने अपना पूरा आशीर्वाद दिया है। यूपी में लगभग 37 साल बाद दोबारा किसी पार्टी की सरकार बनी है। भाजपा का वोट शेयर भी उत्तर प्रदेश में 39% से बढ़ कर 42% हुआ है।

उत्तराखंड बनने के बाद हर चुनाव में सरकार के बदलने का ट्रेंड रहा है लेकिन हमने इस बार माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में उत्तराखंड का चुनाव लड़ा और दोबारा लगभग दो-तिहाई बहुमत के साथ देवभूमि की जनता के आशीर्वाद से भाजपा की पुनः सरकार बन रही है। मणिपुर में पहली बार भारतीय जनता पार्टी अपने दम पर पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बना रही है। गोवा में हम जीत की हैट्रिक लगा रहे हैं। असम में नगर पालिका चुनाव में भी भाजपा ने 80 में से 77 सीटों पर जीत हासिल की। इतना ही नहीं, असम की एक विधान सभा सीट पर हुए उप-चुनाव में भी भाजपा को बड़े अंतर से जीत प्राप्त हुई है। स्पष्ट है कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नीतियों एवं उनके कार्यक्रमों को समग्र राष्ट्र की जनता ने अपना पूरा समर्थन दिया है।

चुनाव के दौरान एक बात बार-बार कहा गया कि कुछ पार्टियां भाजपा के खिलाफ एकजुट हो गई हैं, इससे उनका वोट बैंक जुड़ जाएगा जिससे उनकी सीटें काफी बढ़ेंगी और भाजपा की जीत आसान नहीं होगी। लेकिन नेताओं के जुड़ने से वोट नहीं मिलते क्योंकि चुनाव मैथेमेटिक्स का नहीं, केमिस्ट्री का विषय है।

चुनाव के दौरान एक बात बार-बार कहा गया कि कुछ पार्टियां भाजपा के खिलाफ एकजुट हो गई हैं, इससे उनका वोट बैंक जुड़ जाएगा जिससे उनकी सीटें काफी बढ़ेंगी और भाजपा की जीत आसान नहीं होगी। लेकिन नेताओं के जुड़ने से वोट नहीं मिलते क्योंकि चुनाव मैथेमेटिक्स का नहीं, केमिस्ट्री का विषय है। देश के गांव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, पिछड़े, युवा एवं महिलायें आज सम्माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के साथ अपना जुड़ाव महसूस करती हैं, उनकी केमिस्ट्री माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के साथ जुड़ती हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश की राजनीति की संस्कृति को बदल दिया है। देश में लंबे समय तक एक तरह की राजनीति चल रही थी। वह राजनीति भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, जातिवाद, परिवारवाद, क्षेत्रवाद पर केंद्रित थी। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने देश के सियासी परिदृश्य को बदलते हुए विकासवाद और रिपोर्ट कार्ड की संस्कृति को प्रतिष्ठित किया है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने गरीब कल्याण योजनाओं के माध्यम से देश के गांव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, पिछड़े, युवा एवं महिलाओं का सशक्तिकरण करने का काम किया है।

उत्तर प्रदेश में पांच साल पहले गुंडाराज, माफियाराज, भ्रष्टाचार और आतंकवाद का बोलबाला था लेकिन भाजपा की डबल इंजन वाली योगी आदित्यनाथ सरकार ने उत्तर प्रदेश को भय मुक्त प्रदेश बनाया है। जो माफिया पहले दनदनाते घूमते रहते थे, वे आज जेल की हवा खा रहे हैं। जो भय का वातावरण बनाते थे, वे आज खुद भयभीत हैं। मणिपुर में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक्ट ईस्ट पॉलिसी को लागू किया। उन्होंने विगत साढ़े सात वर्षों में लगभग 50 बार नॉर्थ-ईस्ट का दौरा किया है। इसका परिणाम मणिपुर में दिख रहा है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने काफी पहले ही कह दिया था कि अगला दशक उत्तराखंड का होगा। देवभूमि की महान जनता ने उनकी इस मुहिम को अपार समर्थन दिया है।

2024 में हमें फिर से ऐतिहासिक विजय प्राप्त करनी है। मैं अपने कार्यकर्ताओं की राष्ट्रभक्ति को नमन करता हूं और आह्वान करता हूं कि हम सबको मिल कर आगे बढ़ना है और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत को यशस्वी बनाना है।

(भाजपाध्यक्ष के विजय दिवस उद्बोधन का आलेख रूपांतर) ●●●

सन्देश यही कि आपकी सुरक्षा 'फौज' से होगी, 'फैज़' से नहीं

दीप कमल ब्यूरो

जेनोसाइड! इस शब्द को पहली बार महाश्वेता देवी से सुना था। एक मित्र के साथ बतौर इंटर्न महाश्वेता जी को कवर करने भोपाल के भारत भवन जाना हुआ था। वह इक्कीसवीं सदी के शुरुआती वर्ष थे। अपने व्याख्यान की शुरुआत ही महाश्वेता ने यह कह कर की थी कि गुजरात में (गोधरा के बाद) जो कुछ भी हुआ उसे राइट (RIOT) कहा जाना झूठ है, वह GENO-CIDE था। अपनी उस पूरी तक़रीर में महाश्वेता देवी ने उस साबरमती एक्सप्रेस के एस-6 बोगी का जिक्र बिल्कुल नहीं किया जिसमें 59 कारसेवकों को जिन्दा भून दिया गया था, जिसकी प्रतिक्रिया में वह दंगे हुए थे। ज़ाहिर है आगे कभी कश्यप ऋषि की धरती कश्मीर पर आड़ा मशीन में चिनार और देवदार के बदले जीवित बलात्कृत देह को बराबर-बराबर हिस्से में चीर देने का जिक्र तो महाश्वेता क्या करती कभी। उसे कभी वे जेनोसाइड जैसा कुछ तो नहीं ही कहतीं, जैसा कभी नक्सल हमलों में जान गवाने वाले आदिवासियों के पक्ष में कभी नहीं कहा उन्होंने।

ऐसी ही सभी सेलेक्टिव चुप्पियों और शैतानी बयानों की मुखालफत करता है विवेक रंजन अग्निहोत्री की फिल्म - द कश्मीर फाइल्स। यह फिल्म कश्मीर के जातीय नरसंहार को पहली बार उसके वीभत्स रूप में दिखाता है जिसमें 5 लाख से अधिक परिवार अपनी ज़मीन से कट कर, अपने ही देश में नारकीय यंत्रणा झेलने को विवश कर दिए गए थे, ऐसा नरसंहार जिसने क्रूरता की सभी सीमाओं को लांघ दिया था।अपनी तरह की पहली और अभी तक अकेली इस फिल्म के बारे में इतना लिखा जा चुका है कि कुछ भी नया कह पाना एक बड़ी चुनौती है। लेकिन यह फिल्म देखते वक़्त शब्द 'जेनोसाइड' ने मुझे भोपाल के भारत भवन की उसी वीथिका में धकेल दिया था जहां हज़ार चौरासी की मां, कुछ और आतंकियों की मां होने की प्रत्याशा में तक़रीर किये जा रही थी।

यह फिल्म बौद्धिक एकालापों को तोड़ने, इस रस्म को ख़त्म करने में भी सफल रही है कि सर उठा के रचना जगत में वही चलेगा जो खान-इब्राहिमों की शागिर्दी करेगा।

कांग्रेस की मेहमान-नवाज़ी

देखा जाय तो इस फिल्म से आहत हो रहे हीन भावनाओं वाले लोग वास्तव में बड़े निरीह लग रहे। उनके तर्क तो ऐसे-ऐसे हैं, मानो हर तरफ से पराजित कोई गिरोह अपने ही पराजय के लिए कुछ बहाने तलाश रहा हो। लेकिन हर बहाना उसे और अधिक लज्जित-पराजित होने का सबब बना रहा हो। अगर आलोचक यह कहते हैं कि इस फिल्म से मुस्लिमों के खिलाफ नफरत फैलेगी, तो उनसे यह पूछना होगा कि क्या नाजियों-फासीवादियों की जघन्यताओं का वर्णन करने से, हिटलर-मुसोलिनी की करतूतों को फिल्माने से कभी जर्मनी या इटली के खिलाफ

कोई नफरत फैला? हालांकि आलोचकों की विमर्श में पराजय का सबब मात्र नहीं है यह फिल्म, अपितु यह फिल्म अनेकानेक मिथ्या अवधारणाओं को खत्म करने में सफल हुई है। इस फिल्म ने उस महाश्वेताई ईको सिस्टम को ध्वस्त करने में सार्थकता पायी है जिसके द्वारा नक्सलियों, आतंकियों, लुटेरों, आक्रांताओं, धार्मांतरण के कारोबारियों, स्मगलरों, डकैतों .... को वैचारिक प्रश्रय देकर भारत को अराजकता का केंद्र बना, कांग्रेस के लिए राजनीतिक ज़मीन तैयार की जाती रही है।

यह फिल्म बौद्धिक एकालापों को तोड़ने, इस रस्म को ख़त्म करने में भी सफल रही है कि सर उठा के रचना जगत में वही चलेगा जो खान-इब्राहिमों की शागिर्दी करेगा। या कि फ़िल्म वही चलने दी जायेगी जिसमें खान चच्चा ए। के। हंगल जैसे शरीफ होंगे और हिन्दू अमूमन अमरीश पुरी के पात्र की तरह हवस का कथित पुजारी। इस फिल्म ने पहली बार बताया है कि खान चचा का भतीजा भी कातिल हो सकता है और पंडित भी पीड़ित होते हैं। इस फिल्म ने सृजन जगत में जड़ें जमा चुकी जड़ताओं के विरुद्ध शंखनाद किया है, काई की तरह राजनीति के घाट को फिसलन भरी बना देने वाले शैवालों के विरुद्ध एसिड, मिथ्या गाल बजाते रहने वालों की गाल पर कांग्रेस का निशान है यह फिल्म।

द कश्मीर फाइल्स कश्मीरी हिन्दुओं की अनदिखी और अनदेखी पीडाओं का साक्षात्कार करने के बहाने हमें बताती है कि हमें अपनी सुरक्षा के लिए 'फैज़' पर नहीं बल्कि 'फौज' पर विश्वास करना होगा। दुनिया भर की राष्ट्रीयताएं यही करती हैं। यह फिल्म हमें बताती है कि लाजिम तौर पर आप जिस 'फैज़' के दिखाए को देखना चाहते हैं, हमेशा की तरह बुतों को तोड़ कर 'बस नाम रहेगा अल्लाह का' है कर देना उनका भी मकसद था। कि आप जिन्हें आमीर खुसरो समझ झूम रहे हैं, उन खुसरो का भी अकेला लक्ष्य आपसे नैना लड़ाय के आपके 'छाप तिलक को छीन लेना' रहा है। फैज़ या ऐसे किसी का इंकलाब वास्तव में 'अनलहक' के लिए है, निजाम-ए-मुस्तफा के लिए है, दारुल इस्लाम के लिए है, सभी बुर्जुआ काफिरों का सफाया कर वास्तव में 'गजवा ए हिन्द' के लिए है। कश्मीर से लेकर कैराना तक महज़ बहाने हैं, मंसूबे वही हैं जिसका जिक्र ऊपर किया गया है। बहरहाल!

...और ख़ातिरदारी भाजपा की

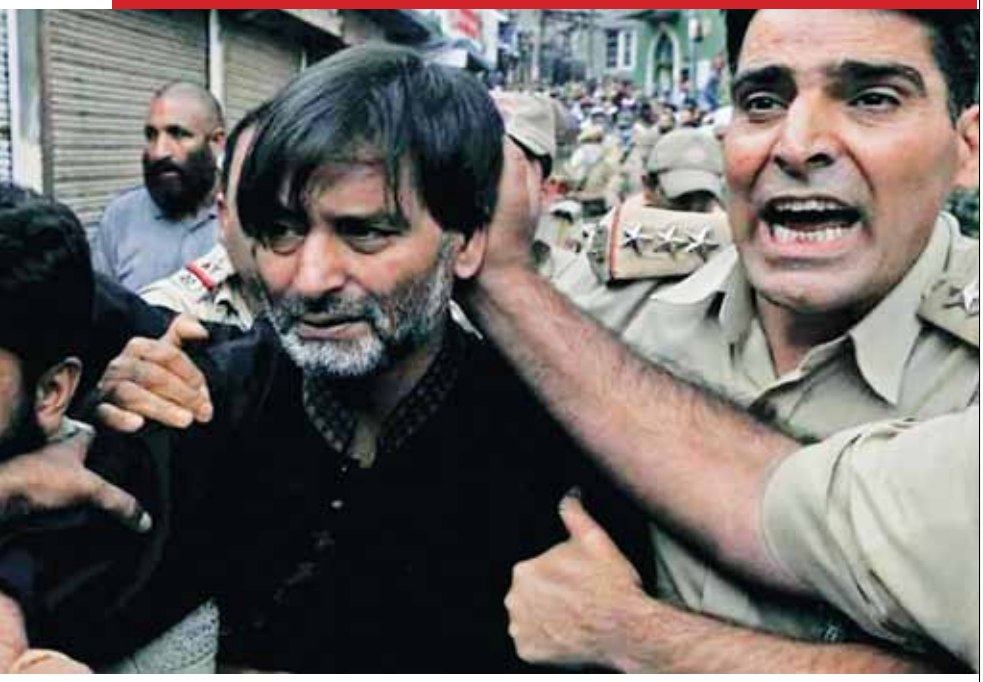

अगर फिल्म पर उठाये गए सवाल का जवाव देने फिर से कोई 'विवेक' फिल्म बनाना चाहें तो उन्हें 1857 वाले उस दौर में जा कर बात शुरू करनी होगी, जब तब के इटावा का 'एलन ओक्टावियो ह्यूम' नाम का फिरंगी कलक्टर साड़ी पहन कर अपनी कोठी से भाग निकलता है और बाद में कांग्रेस की स्थापना करता है

बात जब भारत के कम्यनिस्ट ड्रिवेन इको सिस्टम की आती है, तो सहज सवाल मन में उठता है कि आखिर भारत के सन्दर्भ में इस्लामी अतिवादी और आतंकी कम्युनिस्ट, ये दोनों एक कैसे हो जाते हैं? खासकर तब जबकि एक के लिए मज़हब अफीम है और दूसरे के लिए रेगिस्तानी कबीले में जन्म लेना वाला मज़हब ही सब कुछ? जवाब यही है कि क्योंकि निराधार वैचारिकता के कारण अस्तित्व का संकट हमेशा दोनों पर है, तो ज़ाहिर है दुश्मन का दुश्मन दोस्त समझ कर वे दोनों अपना अस्तित्व बचाने गलबहियां किये होते हैं। समानता दोनों में यह है कि मुस्लिम आतंकी एक ऐसी दुनिया का सपना देखते हैं जहां केवल मोमिन हों, जहां कथित 'दारुल हरब' का सफाया कर दिए जायें, वहीं कम्यूनिस्टों के लिए यह दुनिया केवल मजदूरों को एक करने के लिए है, शेष सभी को ख़त्म कर दिया जाना चाहिए। एक बुर्जुआ विहीन दुनिया बनाना चाहता है तो दूसरे का वादा दुनिया को काफिरों से मुक्त करना है। एक अपने आसमानी किताब के लिए खून की हर दरिया पार कर जाने को तत्पर हैं, तो दूसरे के लिए हर वह रक्तपात जायज़ है जिससे उसका 'मेनिफेस्टो' मज़बूत होता है। एक अपने मार्क्स-माओ के अलावा शेष किसी के प्रति कोई दायित्व महसूस नहीं करता, तो दूसरे के लिए बस एकमात्र मुहम्मद

ही 'साहब' हैं।

ये दोनों तत्व मिल कर एक 'सिस्टम' बनाते हैं, और उसी पारिस्थितिकी तंत्र अर्थात ईको सिस्टम के सहारे कांग्रेस जैसी परजीवी पार्टी अमरबेल की तरह अपने अस्तित्व को बचाते हुए उसी जड़ को सोखती रहती है जिसे हम 'हिन्दुस्तान' कहते हैं। कश्मीर फाइल्स इन्हीं अमरबेलों का पर्दाफ़ाश करती हुई, इस ईको सिस्टम को बे-हिजाब करती हुई आगे बढ़ती है। यह आख्यान उस अनदेखे दर्द को शब्द देता है जिसे कश्मीर से लेकर कर्णावती और कांकेर तक हमने महसूस किया है। कभी पाकिस्तान समर्थित आतंक, कभी आस्तीन के गोधराई सांपों, तो कभी बस्तर में सक्रिय कम्युनिस्ट आतंकियों के रूप में!

द कश्मीर फाइल्स पर उठाये जा रहे सभी सवालों के बीच ही इस फिल्म ने सौ करोड़ के क्लब में खुद को शामिल किया है, या यूं कहें कि इसने ऐसा एक ऑरगेनिक क्लब बनाया है जहां गैर खान-गैर अब्राहमिक फ़िल्में भी अब सौ करोड़ी हो जाने का साहस कर सकती हैं। इस क्लब की सदस्यता के लिए अब एक स्वस्थ होड़ मचेगी, ऐसी संभावनाओं के द्वार तो इस फिल्म के बाद निस्संदेह खुले हैं।

यूं तो इस फिल्म पर बनाए सभी बचकाने सवालों ने जवाब पा लिया है। वैसे भी सफलता से बड़ा जवाब कुछ नहीं होता। फिर भी केवल एक सवाल का जवाब यहां देना अभी भी प्रासंगिक होगा। सवाल फिल्म में वर्णित समय में केंद्र में भाजपा समर्थित सरकार होने, और इस मामले में कांग्रेस को निर्दोष कहने को लेकर है। ऐसे तत्त्वों को कहना होगा कि कश्मीर की समस्या केवल उस एक दरम्यानी रात की नहीं है, जिसे फिल्माया गया है। ऐसे नासूर कभी एक दिन में बनते भी नहीं हैं। फिल्म के विरोधियों का जवाब देने के लिए तो वास्तव में एक 'द कांग्रेस फाइल्स' बनाने की ज़रूरत होगी। सीरीज में बताना होगा कि ऐसी सभी घटनाओं का अंतिम जिम्मेदार कांग्रेस है।

अगर फिल्म पर उठाये गए सवाल का जवाव देने फिर से कोई 'विवेक' फिल्म बनाना चाहें तो उन्हें 1857 वाले उस दौर में जा कर बात शुरू करनी होगी, जब तब के इटावा का 'एलन ओक्टावियो ह्यूम' नाम का फिरंगी कलक्टर साड़ी पहन कर अपनी कोठी से भाग निकलता है। अगर उस दिन ओक्टावियो ह्यूम निकल भागने में सफल नहीं होता तो कांग्रेस का जन्म ही नहीं होता। फिर कश्मीर समेत समूचे अखंड भारत की कहानी ही कुछ और होती। उस पहले स्वतंत्रता संग्राम (कथित सिपाही विद्रोह) के देशभक्त क्रांतिकारियों के आक्रमण से मुश्किल से जान बचा कर भागे ओक्टावियो ह्यूम को झट यह महसूस होता है कि अंग्रेजों के खिलाफ उबल रहे जनाक्रोश रुपी तापमान से बर्तानिया सल्तनत रूपी प्रेशर कूकर की रक्षा के लिए एक 'सेफ्टी वाल्व' चाहिए होगा, उसी सेफ्टी वाल्व को हम आज 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के रूप में जानते हैं। फिल्म में भले एक सूत्र वाक्य में कांग्रेस को प्रेशर कूकर का सेफ्टी वाल्व बताया गया हो लेकिन सच यह है अगली 'फ़ाइल्स' बनाने के लिए उसी सूत्र वाक्य की व्याख्या करनी होगी जब अंग्रेजों द्वारा अंग्रेजों के लिए निर्मित कांग्रेस का जन्म हुआ था।

ऐसी कोई फिल्म बनने पर कहानी आगे इस तरह बढ़ेगी जिसमें बंगाल विभाजन में विफल हुई ताकतवर बर्तानिया हुकूमत लुट-पिट कर भी देश छोड़ते-छोड़ते भारत को न केवल बंगाल से बल्कि पंजाब, कश्मीर और अन्य राज्यों के बीच से भी उसी तरह काटने में सफल होती है जिस तरह फिल्म में बलात्कृत कश्मीरी बहन को आड़े से चीर दिया गया था। आगे कहानी द्विराष्ट्रवाद का सिद्धांत स्वीकार करने, कश्मीर को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने की (शायद नोबल की आस में के गयी) नेहरूवियन भूल, अनुच्छेद 370 रोपने, धारा 35 A थोपने, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान जिसे डा. मुखर्जी जी की मां श्रीमती योगमाया देवी ने हत्या होना बताया था.... से चलते हुए आगे बढ़ेगी। और अंततः यह कहानी मोदी सरकार द्वारा 370 को निष्प्रभावी करने, 35 A को समाप्त करने के समय भी कांग्रेस के लगातार लगाए अड़ंगे, इसके खिलाफ संसद में किये मतदान, अपने घोषणा पत्र में फिर से यह वादा करने कि इन नासूरों की फिर से बहाली होगी, राजद्रोह क़ानून ख़त्म होने के कांग्रेसी वादे से लेकर... अफज़ल हम शर्मिंदा हैं, तेरे कातिल ज़िंदा हैं, भारत तेरे टुकड़े होंगे इंशाअल्लाह-इंशाअल्लाह वाले नारे के सरगना जेएनयू के कन्हैया कुमार के बेनकाब होकर कांग्रेस में ही शामिल हो जाने तक बढ़ती जायेगी। अब जब बात निकली है तो इसी तरह दूर तलक जायेगी। और जब बातें जायेंगी दूर तलक तो लाजिम है हम भी देखेंगे, देखते रहेंगे ही.....! ●●●

ऑपरेशन गंगा

यूक्रेन से छात्रों की सकुशल घर वापसी मोदीजी के अथक प्रयासों का परिणाम

भीषण संकट की घड़ी में यूक्रेन से हर भारतवासी की सकुशल घर वापसी सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अथक प्रयासों की जितनी सराहना की जाय वह कम है जबकि कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने इस मामले में भी नकारात्मक राजनीति की सीमा लांघ। भारत जैसा कोई देश नहीं है जिसने भीषण युद्ध की आग में जल रहे अपने नागरिकों को स्वदेश वापस लाने में इतनी गंभीरता दिखाई। केवल तीन हफ्ते में भीषण युद्ध के बीच में यूक्रेन से लगभग 20,000 भारतीयों की सकुशल वतन वापसी हम सभी देशवासियों के लिए गर्व की बात है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विगत साढ़े सात वर्षों में पूरे विश्व में देश की जो साख बनाई है, उसका पूरा लाभ भारत को लगातार मिल रहा है। मोदी जी ने इस विषय को खुद गंभीरता से लिया। उन्होंने इस विषय पर 8 हाई लेवल मीटिंग की। उन्होंने 11 बार दुनिया के बड़े-बड़े नेताओं से बात की। तीन बार रूस के राष्ट्रपति पुतिन से और दो बार यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंसकी से भी बात की। उन्होंने अपने चार वरिष्ठ मंत्रियों को यूक्रेन के पड़ोसी देशों में भेजा। एक तरफ जहां पूरी सरकार इस त्रासदी से निपटने में जुटी थी वहीं कांग्रेस ने इस मुश्किल वक्त में भी छात्रों के परिजनों को गुमराह करने का काम कर रही थी। दुर्भाग्य की बात है कि कांग्रेस के कुछ नेताओं ने इस दौरान भी गलत जानकारियां फैलाई। भाजपा कार्यकर्ताओं ने यूक्रेन में फंसे 18.5 हजार छात्रों के परिवारों से संपर्क किया। इसके लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ताओं की लगभग 2,000 टीमें बनाई गई। इस टीम ने अलग-अलग यूक्रेन में फंसे छात्रों और नागरिकों के परिवार के सदस्यों से मुलाकात की, उनका ढाढ़स बढ़ाया, केंद्र सरकार की ओर से किये जा रहे प्रयासों के बारे में बताया और केंद्र सरकार को उन परिवार की समस्याओं से अवगत कराया। संकट की इस घड़ी में जब कांग्रेस पार्टी देश का हौसला बढ़ा सकती थी, केंद्र सरकार के साथ खड़े होकर मदद कर सकती थी, तब केरल कांग्रेस के ट्विटर हैंडल से आपत्तिजनक और गलत पोस्ट शेयर किए गए। जम्मू-कश्मीर के एक छात्र राशिद रिजवान का रोता हुआ वीडियो भी कांग्रेस ने सोशल मीडिया पर 2 मार्च को शेयर किया, जबकि उस वक्त उस छात्र का रेस्क्यू भी हो चुका था और वह छात्र श्री नरेन्द्र मोदी सरकार को धन्यवाद ज्ञापित कर रहा था।

प्रदेश भाजपा द्वारा यूक्रेन में फँसे छत्तीसगढ़ी छात्रों की वापसी में समन्वय के लिए श्री राजीव अग्रवाल और प्रीतेश गांधी की एक समिति बनायी थी। इस समिति ने छात्रों की वापसी में उल्लेखनीय योगदान दिया। समिति के सदस्यों द्वारा एयरपोर्ट पर छात्रों की आगवानी। इस दौरान प्रदेश भर में भाजपा के सभी नेता-कार्यकर्तागण उन परिवारों के सम्पर्क में रहे।

वरिष्ठ भाजपा नेता श्री पीयूष गोयल और श्री अनुराग ठाकुर के प्रेस वार्ता पर आधारित। ●●●

भाजपा किसान मोर्चा छत्तीसगढ़ की बैठक कांकेर में सम्पन्न हुई। उक्त बैठक में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह, पूर्व कृषि मंत्री बृजमोहन अग्रवाल, किसान मोर्चा के राष्ट्रीय मंत्री बजरंगी प्रसाद यादव प्रमुख रूप से शामिल हुए। बैठक में किसान मोर्चा के गतिविधियों की समीक्षा कर आगामी रणनीति पर कार्ययोजना बनाई गई। आगामी तीन महीनों में मंडल, जिला की बैठक , ग्राम पंचायत स्तर पर किसान संयोजक की नियुक्ति, विधानसभा स्तरीय किसान सम्मेलन किये जायेंगे। पूर्व मुख्य मंत्री डॉ रमन सिंह ने मोर्चा पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि भूपेश सरकार में विकास कार्य ठप्प हो गए हैं, लाखों गरीब किसान प्रधान मंत्री आवास के लिए भटक रहे हैं, भूपेश सरकार द्वारा 14 लाख से अधिक आवास लौटाए जाने के कारण छत्तीसगढ़ 18 हजार करोड़ से वंचित हो गया। किसानों को स्थाई बिजली कनेक्शन नही मिल पा रहें हैं, किसान मोर्चा के कार्यकर्ता कमर कस कर तैयार हो जाएं इस भ्रष्ट सरकार की विदाई का समय नजदीक आते जा रहा है। पूर्व कृषि मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने भूपेश सरकार को माफिया सरकार बताया, उन्होंने कहा कि नशे का कारोबार बढ़ गया है और इससे सर्वाधिक नुकसान किसान परिवार को है, स्कूल कालेज की नई स्थापना नही हो रही, सड़कें नही बन रही, खनन माफिया के चंगुल में प्रदेश है और इससे प्रदेश की 80 प्रतिशत आबादी जो कृषि कार्य मे लगी है वही सबसे ज्यादा पीड़ित हो रहे हैं, उन्होंने इस माफिया सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए मोर्चा कार्यकर्ताओं को सड़क की लड़ाई लड़ने का आव्हान किया। मोर्चा के राष्ट्रीय मंत्री बजरंगी प्रसाद यादव ने मोर्चा के सभी कार्यकर्ताओं का परिचय प्राप्त कर , संगठन को और मजबूत करते हुए इस जनविरोधी सरकार को उखाड़ फेंकने का आव्हान किया।

बैठक को प्रदेश अध्यक्ष श्यामबिहारी जायसवाल, राष्ट्रीय मंत्री पिंकी शाह, किसान मोर्चा प्रभारी संदीप शर्मा, भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष विक्रम उसेंडी, पूर्व मंत्री लता उसेंडी ने भी संबोधित किया। बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष गण गौरीशंकर श्रीवास, चंदन साहू, कोमल सिंह राजपूत, मनोज शर्मा, प्रदेश मंत्री गण गजेंद्र यादव, ओमप्रकाश चंद्रवंशी, कुलकित चंद्रा, गोमती द्विवेदी, दिनेश सिंह, पवन साहू, कोषाध्यक्ष प्रीतम गबेल, अनिल अग्रवाल, योगेंद्र वर्मा, प्रशांत चंद्राकर, आकाश गुप्ता, राहुल टिकरिहा, सहित समस्त जिला प्रभारी , प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य शामिल थे। बैठक का संचालन महामन्त्री द्वारिकेश पांडे ने किया। बैठक में कार्यक्रम संयोजक प्रदेश उपाध्यक्ष आलोक ठाकुर ने कृषि प्रस्ताव रखा जिसका समर्थन चन्दन ठाकुर और गौरीशंकर श्रीवास ने किया।

किसान मोर्चा कार्यसमिति

जन विरोधी कांग्रेस को उखाड़ फेकने का संकल्प

छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान प्रदेश है, प्रदेश की 75 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। कृषि छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, परंतु वर्तमान समय मे राज्य की भूपेश सरकार की वादाखिलाफी एवं उपेक्षा पूर्ण रवैय्ये के चलते किसानों में गहरे असंतोष का वातावरण है। सरकार बनाते समय कांग्रेस की भूपेश सरकार ने किसानों से आसमानी वायदे किये थे जिसके भरोसे किसानों ने इस सरकार को सत्ता सौंपी है, परंतु वादा निभाने में यह सरकार फिसड्डी साबित हुई है। किसानों के कर्ज माफी के मामले में राष्ट्रीयकृत बैंकों से कर्ज लिए किसानों की घोर उपेक्षा की गई परिणाम स्वरूप लाखों किसान कर्ज माफी से वंचित हो गए। एक-एक दाना धान खरीदने और धान खरीदी में 15 क्विंटल की लिमिट खत्म करने का वादा करने वाली यह सरकार न केवल लिमिट में कटौती कर दी बल्कि धान न खरीदना पड़े इस लिए रकबा कटौती, रकबा समर्पण जैसे अनेक प्रपंच रच किसानों को मानसिक परेशान करना इस सरकार का धर्म बन गया है। धान के दो साल का बकाया बोनस देने, सिंचाई का रकबा दोगुना करने के वायदा कर सत्ता में आई भूपेश सरकार सिंचाई के क्षेत्र में एक इंच भी कार्य नही कर पायी है, वहीं विद्युत कटौती और लो वोल्टेज की समस्या के चलते हर साल हजारों एकड़ की फसल बर्बाद हो रही है।

भारतीय जनता पार्टी
किसान मोर्चा छत्तीसगढ़

राजनीतिक प्रस्ताव

प्रस्ताव : आलोक ठाकुर
समर्थन : चन्दन साहु, गौरी शंकर श्रीवास

बकाया बोनस देने की बात को तो भूल ही चुकी है ये सरकार। फूड प्रोसेसिंग केंद्र के खोखले प्रचार से कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता इतने मुदित हैं कि अन्य प्रांतों में झूठे भाषण बाजी कर अपनी जग हंसाई कर रहे हैं। गुणवत्ता विहीन कीटनाशक, खाद के प्रयोग से नुकसान उठाये एवं रकबा के अनुरूप धान नही बिकने से परेशान किसान आत्महत्या करने मजबूर हुए हैं। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार सिर्फ एक वर्ष 2020 में ही प्रदेश के 537 किसानों ने आत्महत्या किये है जबकि सरकार के अनुसार तीन में आत्महत्या की संख्या 431 बताया जाकर सदन को तक गुमराह किया जा रहा है।

भूपेश सरकार आने बाद से ही किसान धान बेचने के लिए बारदाना और खेती के लिए खाद के लिए भटक रहे हैं। खाद को सहकारी समिति से गायब कर किसानों को खुले बाजार के हवाले कर दिया गया है जहां किसान दोगुने तिगुने दाम में खाद लेने मजबूर हैं, ऊपर से लदान के रूप में अन्य बाय प्रॉडक्ट लेने की मजबूरी

अलग। नामांतरण, बटवारा, खाता विभाजन के राजस्व मामलों में भयंकर भ्रष्टाचार के चलते वकील और राजस्व अधिकारियों के बीच विवाद की स्थिति निर्मित हो रही है। पूर्व की भाजपा सरकार के समय 8- 9 हजार करोड़ रु का अलग से कृषि बजट बनाकर किसानों को खाद, बीज, कीटनाशक, विभिन्न उपकरण, हार्टिकल्चर क्षेत्र में किसानों को दिए जाने वाले अनुदान लगभग बन्द किये जा चुके हैं।

दूसरे राज्य में आत्महत्या करने वाले किसानों के लिए घड़ियाली आंसू बहा कर राजनीति करने वाली, करोड़ों रूपये का मुआवजा देने वाली भूपेश सरकार छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए कितनी निर्दयी है इसका खुलासा उस वक्त हो गया जब नया रायपुर के आंदोलनरत किसान के आंदोलन के दौरान मृत्यु होने पर मात्र 4 लाख मुआवजा की घोषणा कर अपने किसान विरोधी चरित्र को उजागर कर दिया। किसानों के नाम पर वोट मांगकर किसानों को छलने वाली भूपेश सरकार बेनकाब हो गयी है, प्रधानमंत्री आवास, आयुष्मान कार्ड, से गरीब आवासहीन किसानों को वंचित करने वाली भूपेश की कांग्रेस सरकार की यह कार्यकारिणी घोर निंदा करती है एवं आगामी विधान सभा मे इस वादाखिलाफी करने वाली , किसान विरोधी सरकार को उखाड़ फेंकने की संकल्प लेती है।

दूसरी तरफ केंद्र में मोदी जी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार किसानों के हित में कार्य कर किसानों के जख्मों में मरहम लगाने का कार्य कर रही है। सन 2014 से आज तक सभी खाद के दाम स्थिर बने हुए हैं। 2014 में जहाँ यूरिया 270 रु बोरी, डीएपी 1310 रु बोरी, पोटाश 940रु बोरी था वही आज भी यूरिया 268 रु, डीएपी 1200 रु, पोटाश 1000रु बोरी में उपलब्ध कराया जा रहा है। यूपीए सरकार ने 2014 में समर्थन मूल्य में 64 हजार करोड़ के अनाज की खरीदी की जबकि 2020-22 में मोदी सरकार ने 2.38 लाख की खरीदी समर्थन मूल्य में किया, एवं 10 करोड़ से अधिक किसानों के खाता में सीधे 60 करोड़ रु किसान सम्मान निधी के दिये। 2021-22 में समर्थन मूल्य में खरीदी और सम्मान निधि को जोड़ा जाय तो यह 3 लाख करोड़ रु होता है जो किसानों को प्राप्त हुए। 2021-22 के ये तीन लाख करोड़ 2014 के 64 हजार करोड़ की तुलना में 5 गुना के लगभग है। अर्थात किसानों को यूपीए सरकार के तुलना में गत वर्ष 5 गुना रुपये। विगत 7 वर्षों में विभिन्न फसलों के समर्थन मूल्य में 48 प्रतिशत से 74 प्रतिशत तक बढ़ोतरी की गई है जो इस अंतराल में अभूतपूर्व बढ़ोतरी है। जीएसटी के दायरे में आने से अनेक कृषि उपकरण एवं कीटनाशक के दाम कम हुए हैं जिससे किसानों को बहुत राहत मिला है। सिंचाई को समवर्ती सूची में शामिल करते हुए केंद्रीय बजट में 20 हजार करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया गया जो स्वागतेय है।

किसानों के हित में काम करने प्रतिबद्ध प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार लगातार एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) में धान, गेंहू के साथ साथ दलहन तिलहन की भी खरीदी में भी नए कीर्तिमान बनाये हैं। समर्थन मूल्य में अनाज बेचने वाले किसानों की संख्या में भी अभूतपूर्व बढ़ोतरी हुई है। किसानों के उपज के लिए उत्तरोत्तर समर्थन मूल्य निर्धारित कर निरंतर समर्थन मूल्य में रिकार्ड अनाज खरीदने वाली केंद्र की किसान हितैषी सरकार और सरकार के नेतृत्वकर्ता यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के प्रति यह कार्यसमिति हृदय से आभार प्रगट करती है। ●●●

कर्मचारियों को छलने वाली कांग्रेस को देना होगा करारा जवाब : डा. रमन सिंह

छत्तीसगढ़ संयुक्त अनियमित कर्मचारी महासंघ के धरना स्थल बुढ़ा तालाब में पहुंच कर भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री डा. रमन सिंह, नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक ने अपना समर्थन दिया। अनियमित कर्मचारियों को संबोधित करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री डा. रमन सिंह ने कहा कि हमने 15 वर्षों तक कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान के लिए कारगर कदम उठाए हैं। लेकिन प्रदेश की कांग्रेस सरकार केवल 3 साल में ही हांफने लगी है। जो वादा किया था उसे पूरा करने बजाय केवल बहानेबाजी में ही मुख्यमंत्री भूपेश बघेल व्यस्त हैं। उन्हें किसी की पीड़ा से कोई मतलब नहीं है। यही कारण है कि आज बड़ी संख्या में अनियमित कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर धरनारत है।

वादाखिलाफी के लिए विश्व प्रसिद्ध है प्रदेश की कांग्रेस सरकार : कौशिक

नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक ने कहा कि हम कर्मचारियों की लड़ाई सदन से लेकर सड़क तक लड़ रहे हैं। इस राज्य का दुर्भाग्य है कि जो वादा मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने किया है, उसे निभाने में पूरी तरह से विफल है। यही कारण है कि आप लोग अपनी मांगों को मनाने लोकतांत्रिक ढंग से धरना दे रहे हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री सदन में खुद ही स्वीकारते हैं कि केवल 20 हजार लोगों को ही नौकरी मिल पाई है और वहीं केवल सियासी लाभ के लिए 5 लाख लोगों को नौकरी देने का सियासी ड्रामा करते हैं। जिसे प्रदेश की जनता भलिभांति समझ चुकी है।

राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष हर्षिता पाण्डेय ने कहा कि इससे पीड़ादायक कुछ भी नहीं हो सकता है कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अपनी मांगों को लेकर महिला शक्ति धरना में है और राज्य की महिला विरोधी इस सरकार को इसकी कोई चिंता नहीं है।

आपातकाल में कुंवारों की नसबंदी जैसा अब शादीशुदा की शादी करा रही कांग्रेस सरकार

प्रदेश भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष शालिनी राजपूत ने महिला बाल विकास मंत्री श्रीमती अनिला भेड़िया द्वारा मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना का टारगेट पूरा करने के लिए शादीशुदा की भी शादी कराने के बयान पूछा कि क्या यह निर्देश मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने दिया है? उन्होंने कहा कि जैसे आपातकाल में टारगेट पूरा करने के लिए कुंवारों की भी नसबंदी होती थी, वैसे ही अब छत्तीसगढ़ में टारगेट पूरा करने कांग्रेस सरकार विवाहितों की शादी करा रही है। कांग्रेस में मंत्री से लेकर मुख्यमंत्री और आपातकाल में जबरिया नसबंदी कराने वाली तब की पीएम तक, सारे कांग्रेसियों की मानसिकता एक ही होती है। तब कुंवारों की नसबंदी करके टारगेट पूरा हो रहा था, अब शादीशुदा की शादी करके भूपेश बघेल की सरकार सुर्खियां बटोर रही है। श्रीमती शालिनी राजपूत ने दंतेवाड़ा में सरकारी विवाह सम्मेलन में महिला बाल विकास मंत्री के बयान पर कहा है कि यह सरकार नहीं कांग्रेस का सर्कस है जिसमें भूपेश बघेल से लेकर अनिला भेड़िया तक सारे कलाकर करतब दिखाते रहते हैं। गेस्ट आर्टिस्ट के तौर पर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम भी इस सर्कस में शराब के कुएं में मोटर साइकिल चलाने जैसा रोल करते नजर आते हैं। अब तक तो ये शराबबंदी लागू न करने के लिए तरह तरह के बयान दे रहे थे अब यह भी बता दिया है कि टारगेट पूरा करने के लिए शादीशुदा की भी शादी करा सकते हैं!

भाजपा का सवाल

कांग्रेस जाते-जाते कितना कर्ज विरासत में छोड़ जाएगी

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक ने कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम के इस बयान पर करारा पलटवार करते हुए पूछा कि कांग्रेस कितना कर्ज जनता पर छोड़ जाएगी? श्री कौशिक ने कहा कहाँ तो कांग्रेस किसानों की कर्जा माफी की बात करके आयी थी और अब राज्य सरकार इतना कर्ज ले चुकी है जिसे किसान और उसकी आने वाले पीढ़ियों तक भुगतना पड़ेगा। श्री कौशिक ने सवाल किया कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार जो कर्ज पर कर्ज लिए जा रही है, क्या उसकी अदायगी कांग्रेस पार्टी करेगी, क्या कांग्रेस का संगठन उसे चुकाएगा, या फिर कांग्रेस की सरकार इस भारी-भरकम कर्ज का बोझ छत्तीसगढ़ की जनता पर ही लादकर जाएगी?

प्रतिवर्ष 18000 बच्चों की मौत, क्या कांग्रेस का यही छत्तीसगढ़ मॉडल है: भाजपा

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा है कि छत्तीसगढ़ में प्रतिवर्ष 18 हज़ार नवजात बच्चों की मौत की यूनिसेफ़ द्वारा आँकड़ों के साथ की गई पुष्टि प्रदेश कांग्रेस की भूपेश-सरकार के लिए कलंकपूर्ण है। श्री साय ने कहा कि यह बेहद शर्मनाक है कि जन्म के एक घंटे के बाद तक 68 फ़ीसदी नवजातों को माँ का दूध तक नसीब नहीं हो पाता है। नवजात शिशुओं की समुचित देखभाल नहीं हो पाने के कारण जन्म से 28 दिनों के भीतर 18 हज़ार बच्चों की मौत हर साल होती है। श्री साय ने सवाल किया कि क्या प्रदेश की कांग्रेस सरकार और उसके प्रवक्ता-मंत्री नेशनल फेमिली हेल्थ सर्वे-2019-2021 के आधार पर जारी यूनिसेफ़ की इस रिपोर्ट को भी भाजपा का आँकड़ा बताकर इसे ठुकराने की राजनीतिक निर्लज्जता और धृष्टता का प्रदर्शन करेंगे?

18 हज़ार बच्चे हर वर्ष मर रहे है ऐसे छत्तीसगढ़ मॉडल से भगवान बचाये:विष्णुदेव साय

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री साय ने कहा कि हाल ही में भाजपा ने आँकड़े प्रस्तुत कर छत्तीसगढ़ में 25 हज़ार आदिवासी बच्चों की मौत के मामले में प्रदेश सरकार से आवश्यक समाधानकारक प्रबंध करने और मृत बच्चों के परिजनों को समुचित मुआवज़ा देने की मांग की, लेकिन प्रदेश सरकार ने न तो इस मुद्दे पर अपना मुँह खोला और न ही इस आपदा के समाधान का कोई रोडमैप प्रदेश को बताया; उल्टे प्रदेश सरकार के प्रवक्ता-मंत्री ने इसे पूरी तरह नकारते हुए इसे भाजपा का आँकड़ा बताकर अपनी ज़िम्मेदारी से मुँह चुराकर घोर संवेदनहीनता का प्रदर्शन किया। बाद में कांग्रेस में मुख्यमंत्री पद की दावेदारी ठोक रहे प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव ने इन आँकड़ों को स्वीकार कर प्रदेश सरकार के छल-प्रपंच और जन-स्वास्थ्य के साथ किए जा रहे फ़रेब को बेनक़ाब कर दिया।

लूटपाट चरम पर

कैबिनेट मंत्री ने ही माना, प्रदेश में चल रही सरकार विरोधी लहर

भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री टी.एस. सिंहदेव द्वारा को प्रदेश में एंटी इंकम्बेंसी के माहौल को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। यह इस बात का संकेत करता है कि 2023 में कांग्रेस सरकार की विदाई तय है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जिस तरह से माफिया राज क़ायम है, हर तरफ हत्या हो रही है, लूटपाट चरम पर है और प्रदेश के एटीएम मुख्यमंत्री केवल गांधी परिवार को खुश करने में जुटे हुए हैं, तब टी.एस. सिंहदेव के बयान से इस बात की सत्यता का पता चलता है कि छत्तीसगढ़ भगवान भरोसे चल रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सरकार नाम की कोई चीज नहीं है। जन आक्रोश लगातार बढ़ता ही जा रहा है। उन्होंने कहा कि जब सत्ता पक्ष के मंत्री ही कहने लगे हैं कि उनकी सरकार जन भावनाओं के मुताबिक काम नहीं कर रही है तो फिर प्रदेश के मुख्यमंत्री दूसरे राज्य में जाकर किस छत्तीसगढ़ मॉडल की बात कर रहे थे यह समझ से परे है।

छत्तीसगढ़ के खनिज संपदा के बारे में राहुल गांधी का फैसला लेना आपत्तिजनक : भाजपा

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता संजय श्रीवास्तव ने कहा है कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के साथ छत्तीसगढ़ और राजस्थान के मुख्यमंत्रियों की छत्तीसगढ़ में राजस्थान के लिए आवंटित कोल ब्लॉक से खनन की अनुमति के मुद्दे पर बैठक घोर असंवैधानिक और आपत्तिजनक है। श्रीवास्तव ने कहा कि इस मुद्दे पर राहुल-प्रियंका के साथ हुई बैठक के बाद यह बात आईने की तरह साफ़ नज़र आ रही है कि मुख्यमंत्री झूठ फैलाकर प्रदेश की मूल्यवान खनिज संपदा पर निर्णय का अधिकार श्री राहुल गांधी को दे रहे हैं। श्रीवास्तव ने सवाल किया कि कोल ब्लॉक के मुद्दे को लेकर छत्तीसगढ़ की सम्पदा का फ़ैसला राहुल गांधी और प्रियंका वाड्रा किस हैसियत से कर रहे हैं? क्या अभी तक 'हिस्सा' तय नहीं हो पाने के कारण मामला फँसा हुआ था? और, शायद अब 'सबकुछ' तय हो जाएगा! श्री श्रीवास्तव ने सवाल दागा कि एक संविधानेतर शख़्सियत को राज्य के खनिज संसाधन के बारे में क्या कोई फ़ैसला लेने का हक़ है? आख़िर किस हैसियत से राहुल-प्रियंका यह तय कर रहे हैं कि छत्तीसगढ़ का कोयला कहाँ बेचा जाए? श्रीवास्तव ने कहा कि प्रदेश की खनिज संपदा के किसी भी आवंटन में छत्तीसगढ़ का हित सर्वोपरि रहना चाहिए।

कोयले में हाथ काला, इसमें भी है गड़बड़ घोटाला

छत्तीसगढ़ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने केंद्र सरकार द्वारा आवंटित कोल ब्लॉक में खनन की अनुमति के लिए राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा यहां आकर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से विनती करने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि इसमें कोई समझौता नहीं हो सकता कि छत्तीसगढ़ के हित प्रभावित हों लेकिन इस मामले में लगता है कि छत्तीसगढ़ के नहीं, भूपेश बघेल के हित प्रभावित हो रहे हैं। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा कि भूपेश बघेल कह रहे हैं कि नियमानुसार राजस्थान को कोयला दिया जायेगा, प्रक्रिया में समय लगता है तो सवाल यह है कि किसने कहा है कि राजस्थान को नियमों के बाहर जाकर कोयला खनन करने की अनुमति दें। यह भी सवाल है कि इस प्रक्रिया में कितना समय लगता है? राजस्थान को भारत सरकार ने उसकी जरूरत की बिजली पैदा करने की लिए कोल ब्लॉक आवंटित किया है तो यह पूरे नियम कायदे के साथ किया गया है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा कि देश में अब कांग्रेस की बैसाखी सरकार नहीं है जिसमें कोल ब्लॉक आवंटन में हाथ काले किये जाते थे। अब भाजपा की मोदी सरकार है जो देश के हर राज्य की जरूरत के मुताबिक बराबर का हक देती है। भूपेश बघेल राजस्थान के हक पर टांग अड़ाए हुए हैं तो वजह कुछ और है। अन्यथा राजस्थान को बहुत पहले ही उसे आवंटित ब्लॉक से कोयला खनन की अनुमति मिल चुकी होती। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा कि श्री गहलोत अपने राज्य के हक के कोयले के लिए कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को पत्र लिख लिखकर थक गए। कोई सुनवाई नहीं हुई तो बेचारे खुद अपनी ही पार्टी की सरकार के मुख्यमंत्री से विनती करने आये और उन्हें नियम के नाम पर टरका दिया गया।

भूपेश बघेल कह रहे हैं कि नियमानुसार राजस्थान को कोयला दिया जायेगा, प्रक्रिया में समय लगता है तो सवाल यह है कि किसने कहा है कि राजस्थान को नियमों के बाहर जाकर कोयला खनन करने की अनुमति दें।

प्रदेश सरकार ने 13 लाख परिवारों के सर से छत छीना, प्रधानमंत्री आवास को लेकर प्रदेश सरकार जरा भी गंभीर नहीं

नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक ने कहा कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार 51 हजार करोड़ रुपए का कर्ज ले चुकी है उसके बाद भी प्रधानमंत्री आवास के लिए राज्यांश देने में भी अक्षम है। स्वयं प्रदेश सरकार ने स्वीकारा है कि आवास योजना के तहत वर्ष 2019 में 765 करोड़ रुपए व 2020-21 में 800 करोड़ रुपए का राज्यांश नहीं दे पायी। जिसके कारण प्रदेश में लाखों की संख्या में प्रधानमंत्री आवास योजना के हित ग्राहियों को लाभ नहीं मिल पाया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2021-22 के लिए केन्द्र सरकार ने 7.82 लाख आवास का लक्ष्य प्रदेश सरकार को दिया था लेकिन राज्यांश जमा नहीं होने पर केन्द्र सरकार ने यह लक्ष्य वापस ले लिया जिसके कारण प्रधानमंत्री आवास की चाह रखने वालों को वंचित होना पड़ा। प्रदेश में आवास के लिए करीब 6 हजार करोड़ रुपए की राशि केन्द्रांश से प्राप्त होती है लेकिन राज्य सरकार के नाकामी के चलते लाखों गरीब परिवार के सर से उनका खुद के छतों से वंचित कर दिया।

भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश प्रभारी राष्ट्रीय मंत्री बजरंगी प्रसाद यादव जी के छत्तीसगढ़ आगमन पर केंद्रिय मंत्री श्रीमती रेणुका सिंह द्वारा स्वागत। इस अवसर पर किसान मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष श्यामबिहारी जायसवाल के नेतृत्व में किसान मोर्चा के कार्यकर्ताओं द्वारा विमानतल पर ज़ोरदार स्वागत किया गया। स्वागत में ज़िलाध्यक्ष गज्जू साहू, प्रदेश उपाध्यक्ष गौरी शंकर श्रीवास, नरेश नामदेव, अनुराग पांडे, रामेश्वर पटेल समेत किसान मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने आत्मीय स्वागत किया।

आक्रोश

अनाचार और हत्या के विरोध में विशाल रैली

भारतीय जनता पार्टी, जिला सूरजपुर के तत्वाधान में जरही की नाबालिग बेटी के साथ हुए अनाचार और हत्या के विरोध में विशाल आक्रोश रैली निकली। जिसमें प्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम, जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपकर नाबालिग बेटी के साथ हुए अन्याय की निष्पक्ष जांच सीबीआई से करवाने की एवं पीड़ित परिवार को भूपेश सरकार द्वारा 50 लाख रुपए का मुआवजा देने की मांग की।

भूपेश की पुलिस अपराधियों की एजेंट बन गई, यह है नवा छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ प्रदेश भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष शालिनी राजपूत ने मुंगेली में पदस्थ टीआई द्वारा दुष्कर्म पीड़िता पर दुष्कर्म के आरोपी से समझौता करने का दबाव बनाने का मामला सामने आने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि भूपेश बघेल की पुलिस अपराधियों की दलाल बन गई। जहां महिलाओं पर अपनी इज्जत लूटने वाले से समझौता करने के लिए पुलिस के अधिकारी दबाव बनाते हैं। क्या भूपेश बघेल सरकार ने पुलिस को अपराधियों से समझौता कराने का ठेका दे दिया है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में महिला उत्पीड़न के मामलों की बाढ़ आ गई है। जब से प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी है तब से महिलाओं और बच्चियों की सुरक्षा खतरे में पड़ गई है। अपराधियों की दलाली जब पुलिस करने लगे तो समझा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ में महिलाएं कितनी सुरक्षित रह सकती हैं।

छत्तीसगढ़ में महिला उत्पीड़न के मामलों की बाढ़ आ गई है। जब से प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी है तब से महिलाओं और बच्चियों की सुरक्षा खतरे में पड़ गई है।

भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष शालिनी राजपूत ने कहा कि भूपेश बघेल के राज में आरोपियों को पुलिस का संरक्षण मिल रहा है तो इसकी सीधी सी वजह राजनीतिक संरक्षण ही है। अन्यथा पुलिस में महिलाओं का ऐसा अपमान करने की हिम्मत नहीं होती कि दुष्कर्म के आरोपी से राजीनामा करने पीड़िता को थाने की बजाय होटल बुलाये और फिर फोन पर यह भी कहे कि रपट दर्ज कराओगी तो गुप्तांग की जांच होगी और अदालत में चीख चीखकर बताना होगा कि क्या हुआ था! उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में महिलाओं की इज्जत लुट रही है। पुलिस दुष्कर्म के आरोपी की दलाली कर रही है और सरकार सो रही है।

भ्रष्टाचार करने चिदम्बरम ने गमले में गोभी उगाई, भूपेश एक्टिवा से धान ढुलवा रहे

छत्तीसगढ़ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने महासमुंद जिले के परसवानी धान खरीदी केंद्र से एक्टिवा में 24 टन धान का परिवहन कर राइस मिल भेजे जाने का फर्जीवाड़ा सामने आने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि भूपेश बघेल कांग्रेस के भ्रष्टाचारी नेताओं में नंबर वन बन गए हैं। वे कांग्रेस के बड़े नेता पी. चिदंबरम से आगे निकल गए हैं। चिदंबरम गमले में करोड़ों रुपए की गोभी उगाने के चमत्कार दिखाते थे अब खुद को किसान कहने वाले भूपेश बघेल ने राज्य के किसानों का धान खरीदने में आनाकानी करने के साथ ही ऐसा अनोखा हुनर दिखाया है कि सारी दुनिया हैरत में पड़ जाए लेकिन कांग्रेस के लिए यह एकदम आसान है। कांग्रेस में काले कारनामे करने वाले एक से बढ़कर एक कलाकार हैं। निर्माता निर्देशक की मांग पूरी करने के लिए ये चांद सितारे भी धरती पर उतार सकते हैं। भूपेश हैं तो कांग्रेस के परिवार को भरोसा है। ये ऐसे चमत्कारी बाबा हैं जो दुपहिया सवारी वाहन में 24 टन धान ढुलवा सकते हैं। यह अचंभा भूपेश बघेल की सरकार में ही संभव है।

भूपेश देश में अराजकता फैलाने की साजिश रच रहे हैं

छत्तीसगढ़ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल द्वारा अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों को जीएसटी क्षतिपूर्ति की अवधि दस साल बढ़ाने केंद्र सरकार पर दबाव बनाने के लिए लिखे गए पत्र पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अपने राज्य में कर्ज लेने के अलावा कुछ किया नहीं है। वे हर वक्त केंद्र सरकार से मदद मांगते हैं और जनता के धन का दुरुपयोग करते हैं। अब वे पहले से ही तय जीएसटी क्षतिपूर्ति की पांच साल की मियाद जून माह में पूरी होने के संबंध में देश भर में अराजकता फैलाने की साजिश कर रहे हैं।

रत्ती भर विकास न करने वाले विनाशपुरुष खुद को विकासपुरुष साबित करते हैं

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा कि भूपेश बघेल जीएसटी क्षतिपूर्ति की मियाद बढ़ाने की मांग के लिए अन्य राज्यों को इसलिए भड़काने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि वे केंद्र सरकार की मदद से अपने चुनावी वादे पूरे करना चाहते हैं। कांग्रेस की भूपेश बघेल सरकार केंद्र के भरोसे चल रही है। केंद्र सरकार ने मदद करने में कभी कोई कमी नहीं रखी लेकिन अपने प्रयासों से राज्य की अर्थव्यवस्था मजबूत करने का ढोल पीटने वाले बघेल ने छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था को पटरी से उतारकर दिवालियेपन की स्थिति में ला दिया है। तीन साल में छत्तीसगढ़ पर इतना कर्ज लाद दिया कि आने वाली कई पीढियां कर्जदार पैदा होंगी। खुद को विश्व स्तरीय अर्थशास्त्री समझने वाले बघेल ने राज्य की अर्थव्यवस्था चौपट कर इसे कंगाल बना दिया है। विकास के नाम पर रत्ती भर भी काम न करने वाले विनाशपुरुष खुद को विकासपुरुष साबित करते हैं। छत्तीसगढ़ के संसाधनों का राजनीतिक दुरुपयोग कर अपनी त्रिसदस्यीय कमान की खुशामद करने वाले बघेल चाहते हैं कि जनता का धन उलीचने के लिए उन्हें लायसेंस मिल जाये, जो कि सम्भव नहीं है। जीएसटी काउंसिल की बैठकों में सारे देश की सहमति से फैसला लिया गया कि जीएसटी क्षतिपूर्ति पांच साल तक दी जायेगी तो अब अकेले भूपेश बघेल इसे दस साल बढ़ाने की मांग क्यों कर रहे हैं। वे भाजपा पर बयानबाजी का आरोप लगा रहे हैं तो जब चाहें, जहां चाहें, तथ्यों पर बहस कर लें।

कांग्रेस सरकार के नए-नए कारनामे, शादीशुदा सरकारी दंपत्ति को निर्धन कन्या विवाह में बिठाया

भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की प्रदेश मीडिया प्रभारी डॉ किरण बघेल ने कहा कि जब से प्रदेश में कांग्रेस की सरकार आई है तब से नित नए-नए असफलता के रिकॉर्ड बनाये जा रहे हैं। भ्रष्टाचार के नए-नए आयाम गढ़े जा रहे हैं, और प्रदेश की जनता को लगातार ठगे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश की सरकार सत्ता के नशे में इतने चूर हो गए हैं कि वे अपने दिए गए लक्ष्य को पूरा करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। ऐसा ही एक मामला दंतेवाड़ा जिले में आयोजित निर्धन कन्या के विवाह में देखने को मिला जब एक सरकारी कर्मचारी दंपत्ति को विवाह में शामिल किया गया। दंतेवाड़ा जिले की मेंडका डोबरा मैदान में निर्धन कन्या विवाह योजना के तहत शादी समारोह में 351 जोड़ों के विवाह का लक्ष्य रखा गया था जिसमे कटेकल्याण ब्लॉक के बड़े गुड़डा सेक्टर से शासकीय कर्मचारी हैं एवं दुल्हन स्वास्थ्य विभाग में काम कर रही है को विवाह में शामिल किया गया।

भाजपा रायपुर जिला कार्यसमिति बैठक एकात्म परिसर में संपन्न हुई। बैठक में पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं वरिष्ठ भाजपा विधायक श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि चुनाव का बिगुल बज चुका है दिन-रात संघर्ष के लिए कार्यकर्ता तैयार रहें। रायपुर शहर जिलाध्यक्ष श्रीचंद सुन्दरानी ने कहा कि प्रवाह का नाम ही संगठन है पर उस प्रवाह की समीक्षा जरूरी। कार्यसमिति में कांग्रेस सरकार की वादाखिलाफी, यूजर चार्ज बढ़ाने, शहर में बढ़ते नशे के कारोबार व अपराध व कोविड-19 में हुए किराया घोटाले से होने वाले जनता की तकलीफों को लेकर प्रस्ताव पेश किया। साथ ही जनता के हक के लिए संघर्ष करने का संकल्प पारित किया। बैठक को भाजपा प्रदेश प्रवक्ता संजय श्रीवास्तव ने भी संबोधित किया।

महत्वपूर्ण कदम

मोदी जी ने मुफ्त राशन की मियाद और बढ़ायी

छत्तीसगढ़ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देश की जनता को कोरोना काल से जारी अतिरिक्त अनाज वितरण की सुविधा छह माह बढ़ाने को जनहित में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम बताया है। श्री साय ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल कह रहे थे कि चुनाव खत्म होते ही मोदी राशन बंद कर देंगे। इससे भूपेश का एक और झूठ सामने आया। मोदी जी ने भूपेश के दुष्प्रचार से उलट 6 माह का राशन और बहाल कर दिया है। साय ने कहा कि भूपेश हमेशा केंद्र और प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रति अपनी हीनभावना का प्रदर्शन करते रहते हैं जबकि बघेल अपनी नाजायज मांगों में साथ भी मोदी जी तक पहुंच जाते हैं।

प्रदेश में जब पुलिस वाले मारे जा रहे है तो जनता कैसे बचेगी?

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा है कि छत्तीसगढ़ को अपराधियों और हत्यारों के भरोसे छोड़ चुकी प्रदेश की कांग्रेस सरकार के तीन साल के शासनकाल में ऐसा एक दिन भी नहीं बीता है, जब प्रदेश की क़ानून-व्यवस्था को अपराधियों ने खुली चुनौती न दी हो। चाकूबाजी-हत्या की वारदातें जब रोज राजधानी को ही दहला रही हैं तो प्रदेश के बाकी इलाक़ों में अपराधों के चलते व्याप्त दहशत का अनुमान सहज लगाया जा सकता है। श्री साय ने कहा कि पूरा प्रदेश अपराधियों की दहशतगर्दी से त्रस्त हो चला है, लेकिन प्रदेश सरकार इस दहशतगर्दी पर कोई अंकुश लगा पाने में नाकाम साबित हुई है।

अपराधियो द्वारा पुलिस वालों की हत्या से आम जनता दहशत में :विष्णु देव साय

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री साय ने राजधानी से लगे महासमुन्द ज़िला मुख्यालय में सायबर सेल में पदस्थ एएसआई विकास शर्मा की कतिपय बदमाशों द्वारा की निर्मम हत्या की वारदात का ज़िक्र करते हुए कहा कि क्या प्रदेश सरकार ने प्रदेश को अपराधियो के हवाले कर दिया है श्री साय ने स्व. विकास शर्मा के शोक-संतप्त परिजनों के प्रति अपनी गहन संवेदना व्यक्त करते हुए स्व. शर्मा को अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में जहाँ अपराधियो को पुलिस का ख़ौफ़ होना चाहिये वही पुलिस वालों की हत्या अपराधी कर रहे है तो आम जनता किसके सहारे है?

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री साय ने मुख्यमंत्री समेत पाँच-पाँच मंत्रियों के गृह संभाग के बेमेतरा ज़िले में महज़ 12 घंटों के अंतराल में मायके जाने से मना करने पर एक महिला की उसके पति द्वारा और एक अन्य मामले में आपसी रंजिश के चलते एक युवक की हत्या के मामलों का भी उल्लेख कर कहा कि बदनीयती और अपनी विफलताओं के बोझ से राजनीतिक तौर पर कुंठित नेतृत्व वाली प्रदेश सरकार की कुनीतियों के चलते छत्तीसगढ़ नशे के सौदागरों की शरणस्थली बन गया है और नशाखोरी की बढ़ती लत से अपराधों में लगातार इज़ाफ़ा हो रहा है। नशाखोरी और अपराधों पर नियंत्रण के प्रदेश सरकार के दावे कोरी लफ़्फ़ाजी ही साबित हो रहे हैं।

खैरागढ़ विधानसभा क्षेत्र के उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी श्री कोमल जंघेल का नामंकन।

बेरोजगारी विषय पर बेरोजगार टेंट लगाकर प्रदेश व्यापी आंदोलन करेगा भाजयुमो

भारतीय जनता युवा मोर्चा प्रदेश की कामकाजी बैठक सोमवार को प्रदेश भाजपा कार्यालय कुशाभाउ ठाकरे परिसर राजधानी रायपुर में संपन्न हुई। बैठक में प्रमुख रूप से भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णु देव साय, संगठन महामंत्री पवन साय भाजपा प्रदेश महामंत्री भुपेन्द्र सवन्नी भाजपा प्रदेश प्रवक्ता व भाजयुमो प्रभारी अनुराग सिंह देव भाजपा प्रदेश मंत्री व भाजयुमो प्रदेश सह प्रभारी ओ. पी. चौधरी भाजयुमो प्रदेश अध्यक्ष अमित साहू भाजयुमो राष्ट्रीय पदाधिकारी व छत्तीसगढ़ प्रदेश प्रभारी आलोक डंगस व दीप ज्योति मुंड और भाजयुमो राष्ट्रीय कायर्कारिणी सदस्य गुंजन प्रजापति उपस्थित रहे। इस बैठक में आगामी कायर्योजना व मिशन 2023 को लेकरके महत्वपूर्ण निणर्य लिए।

भाजयुमो की कामकाजी बैठक के द्वितीय सत्र में सायबर विस्तारकों प्रभारियों व संभाग प्रभारियों की बैठक को सम्बोधित करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णु देव साय ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने भारतीय जनता युवा मोर्चा को सायबर विस्तारक के रूप में बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि भाजयुमो की युवा तरूणाई की ऊर्जा सकारात्मक शक्ति उत्साह के बूते प्रत्येक शक्ति केन्द्रों के अंदर प्रत्येक बूथों में संगठन के साथ कदमताल कर 2023 की राह आसान करेगा।

भाजपा संगठन महामंत्री पवन साय ने भाजयुमों कायर्कतार्ओं को संबोधित करते हुऐ कहा कि संगठनात्मक दृष्टिकोण से प्रवास का बड़ा महत्व होता है। प्रवास आपसी जुडाव सामंजस्य कायर्कुशलता नवाचार के साथ साथ जनजुडाव को बढ़ाता है और नवाचार के साथ नया अनुभव भी प्राप्त होता है और भाजयुमों के प्रत्येक कायर्कतार् को अपने आप को निखारने के लिए इस दिशा में स्वतः ही पहल करने की आवश्यकता है। उन्होने वन बूथ 20 यूथ को लेकर आवश्यक दिशा निदेर्श दिये साथ ही भाजयुमो के सायबर विस्तारक की भूमिका एवं 2023 की दृष्टि से सायबर विस्तारक के महत्व की विस्तार पूवर्क जानकारी दी।

भाजपा प्रदेश महामंत्री भूपेन्द्र सवन्नी ने भाजयुमो कायर्कतार्ओं को संबोधित करते हुऐ कहा कि बेरोजगारी विषय पर भाजयुमों का प्रदेश व्यापी आंदोलन 2023 में छत्तीसगढ़ से कांगे्रस को उखाड फेंकने वाला साबित होगा।

भारतीय जनता युवा मोचार् के प्रदेश अध्यक्ष अमित साहू ने भाजयुमो की कामकाजी बैठक की प्रथम सत्र में भाजयुमो पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में बीते साढ़े तीन वर्षों के अंदर जिस प्रकार से प्रदेश के युवाओं को छला गया ठगा गया युवाओं के भावनाओं के साथ खिलवाड किया गया और लगातार झूठे दावे और खोखले प्रचार किये जा रहे हैं उसका पोल खोलने और छत्तीसगढ़ के युवाओं के अधिकार की लडाई लडने की जिम्मेदारी भारतीय जनता युवा मोर्चा की है। इसलिए हमने बेरोजगारी विषय पर प्रदेश व्यापी आंदोलन को लेकर रणनीति बनाई है जिसे हम सभी को मिलकर जन आंदोलन के रूप में खडा करना है।

भाजयुमो प्रदेश प्रभारी अनुराग सिंह देव ने भाजयुमों कायर्कतार्ओं को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल अपने भाषणों में प्रदेश में पांच लाख नौकरी देने की बात करते हैं, प्रदेश भर में मुख्यमंत्री का पोस्टर लगाकर चार लाख पैंसठ हजार नौकरी की बात की जाती है और जब सदन में हमारे नेता मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से सवाल करते हैं तब जवाब में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी के झूठे दावों की पोल खुल जाती है और वे महज सोलह हजार नौकरियों की बात करते हैं। भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय पदाधिकारी व प्रदेश प्रभारी आलोक डंगस व दीप ज्योति मुंड ने सभी जिलों की कामकाज की समीक्षा की सभी जिला प्रभारियों से प्रवास की जानकारियां ली वन बूथ 20 यूथ एवं संगठनात्मक कार्यों में आ रही परेशानियों को लेकर संवाद किया एवं बेहरत कायर् संपादन के लिए सुझाव भी आमंत्रित किये। ●●●

भूपेश बतायें, यूपी में मुआवजा बांटने क्या प्रियंका से जांच कराई थी- भाजपा

छत्तीसगढ़ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने नया रायपुर में न्याय की मांग कर रहे किसान सियाराम पटेल की मौत के एक रोज बाद मुख्यमंत्री भूपेश बघेल द्वारा मुआवजा की मांग पर अपर मुख्य सचिव को जांच के निर्देश दिए जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि भूपेश बघेल सरकार के अन्याय के शिकार किसान की मृत्यु पर बिना किसी हील हुज्जत के फौरन एक करोड़ का मुआवजा दिया जाये।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की संवेदना यूपी में मुआवजा बांटने के लिए जाग गई लेकिन अपनी ही सरकार के अत्याचार के कारण जान गंवाने वाले छत्तीसगढ़ के किसान के परिवार के लिए उनके मन में कोई संवेदना नहीं है। यूपी चुनाव में किसानों को लुभाने के लिए मुआवजावीर बनने वाले भूपेश बघेल को छत्तीसगढिया किसान की मौत पर मुआवजा देने के लिए जांच सूझ रही है। यूपी के किसान पर मेहरबान और छत्तीसगढ़ का किसान हलाकान! भूपेश बघेल का असली चरित्र सामने आ गया है। यूपी में छत्तीसगढ़ के किसानों के हक का पैसा बांटने छंटपटा रहे थे तब क्या वहां प्रियंका गांधी वाड्रा ने जांच करके रिपोर्ट के तौर पर भूपेश बघेल को आदेश जारी कर दिया था कि पचास पचास लाख से कम में काम नहीं चलेगा?

छ.ग. के पैसे से लखीमपुर में 50-50 लाख मुआवजा जबकि छत्तीसगढ़ के किसान की जेब हाथ साफ

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा कि खुद को किसान बताने वाले अपने राज्य के किसान की प्रदर्शन के दौरान मृत्यु पर राजनीतिक संवेदना प्रकट कर रहे हैं लेकिन मुआवजे के लिए अपने अफसर को जांच के लिए कह रहे हैं! भूपेश बघेल बतायें कि किस बात की जांच कराना चाहते हैं? अपने हक की लड़ाई लड़ रहे किसान की मौत को सीधे सीधे स्वीकार कर किसानों से माफी मांगते हुए तत्काल एक करोड़ रुपए की मुआवजा राशि देने की बजाय मुख्यमंत्री क्यों इतने गंभीर मामले की लीपापोती में लगे हैं।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा कि किसानों को गुमराह कर सरकार बनाने वाली कांग्रेस ने तीन साल में कृषि और किसानों साथ केवल राजनीतिक पैंतरेबाजी ही की है। किसान की मौत पर मुआवजे की मांग को जांच के नाम पर टरकाने की यह नीति छत्तीसगढ़ के हर एक किसान का अपमान है। मुख्यमंत्री तत्काल प्रभाव से मृतक किसान के परिवार को एक करोड़ रुपये मुआवजा देने के साथ ही न्याय के लिए संघर्ष कर रहे किसानों की सभी मांगें फौरन पूरी करें। ●●●

पंकज झा.

छत्तीसगढ़ के इन तमाम दर्दों की आखिर दवा क्या है?

ओड़िशा का दाना मांझी याद है आपको? भूख के लिए कुख्यात रहे ओड़िशा के कालाहांडी में अपनी मृत पत्नी की लाश को कंधे पर लादे पैदल चलते वे दाना मांझी जिनकी पीड़ा से दुनिया स्तब्ध रह गयी थी। इतना अधिक चर्चित हुआ था वह मामला कि बहरीन के सुलतान भी दाना की सहायता को आगे आये थे, उन्हें लाखों की मदद मिली। उनके बच्चों की परवरिश और शिक्षा के पर्याप्त इंतजाम हो गए थे। लेकिन, दाना मांझी की तरह छत्तीसगढ़ के ईश्वर दास देश-दुनिया की उतनी भी संवेदना के हकदार नहीं रहे। छग के आदिवासी संभाग सरगुजा के ईश्वर दास ने अपनी बीमार बिटिया को इलाज के लिए लखनपुर ब्लाक के सामुदायिक अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां बच्ची की मौत हो गयी। आरोप यह भी है कि ग़लत चिकित्सा के कारण बच्ची की जान चली गयी।

बच्ची की मौत के बाद पिता इश्वर लाश ले जाने के लिए एम्बुलेंस की मिन्नतें करता रहा लेकिन अस्पताल प्रशासन द्वारा उसे उपलब्ध नहीं करा पाने पर वे पैदल ही दस किलोमीटर अपने कंधे पर बेटी की लाश को लेकर निकल पड़े। पिछली भाजपा सरकार में ही मरीजों को चिकित्सा के लिए घर से अस्पताल तक लाने, या मृत्यु की स्थिति में पार्थिव शरीर को ससम्मान घर तक पहुचाने की पर्याप्त व्यवस्था की गयी थी। आज भी वे सारे इंतजामात हैं ही लेकिन शासकीय और प्रशासकीय लापरवाही के कारण किस तरह के हालात हो सकते हैं, ईश्वर दास का यह मामला इसका साक्षात उदाहरण है।

यह जानकर किसी को भी दुःख होगा कि ऐसा मामला खुद स्वास्थ्य मंत्री के इलाके में हुआ है, फिर भी कहीं कोई ख़ास चर्चा नहीं है। हालांकि खबर सामने आने पर स्वास्थ्य मंत्री ने जिम्मेदार ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी को हटा दिया है लेकिन सवाल यहां अलग है। सवाल यह है कि छत्तीसगढ़ के ऐसे किसी भी दर्द के प्रति देश का मीडिया ऐसा उदासीन क्यों है? शेष देश में घटी ऐसी या इससे कम दर्दनाक घटनाएं भी एजेंडे के कारण दुनिया भर में पहुंचा दी जाती है लेकिन छत्तीसगढ़ को आखिर किसका शाप मिला है जिसकी किसी भी घटना से ड्राइंग रूम में पसरे भारतीय मध्य वर्ग को फर्क नहीं पड़ता या उन्हें फर्क पड़ने नहीं दिया जाता है? आखिर क्या कारण है कि बड़े नक्सल हमले के अलावा छग की अन्य वीभत्सतम घटनाएं भी मीडिया और समाज की पेशानी पर ज़रा भी बल देने लायक नहीं समझा जाता है?

सवाल केवल इस एक या ऐसी ही घटनाओं का नहीं है। यह सही है कि किसी एक निर्मम घटना की तुलना किसी अन्य घटना से करना अनुचित है, या लाशों की संख्या के आधार पर भी तुलना उचित नहीं, लेकिन अन्य घटनाओं का जिक्र करने पर यह समझा जा सकता है कि छत्तीसगढ़, अपने ही

देश में ख़बरों के मामले में कितना उपेक्षित और वंचित है। इस प्रदेश को आप मीडिया की दृष्टि से एक वंचित समूह में शामिल कर सकते हैं। ऐसा वंचित समूह जिसकी ख़बरों को दिखने के लिए आगे शायद 'आरक्षण' की ज़रूरत पड़े। कि समाज को तय करना होगा कि इस प्रान्त की ख़बरों को भी स्थान मिले।

सवाल केवल एक इश्वर मांझी का नहीं है। याद कीजिये बिहार के मुजफ्फरपुर या उत्तर प्रदेश के गोरखपुर की उन दर्दनाक घटनाओं को जिसमें चमकी बुखार या ऐसी ही कुछ बीमारी के कारण वहां बच्चों की लगातार मौत हो रही थी। किस तरह उन दोनों प्रदेश के दो शहरों में हुई घटनाओं ने दुनिया भर में ऐसा प्रचारित किया मानो अब कोई भी शिशु इन दोनों प्रदेशों में सुरक्षित नहीं है। सरकारों ने मीडिया के दबाव में ही सही लेकिन झटपट कदम उठाये और इतनी बड़ी चुनौती का कुछ हद तक समाधान भी कर लिया गया। आज वर्षों से गोरखपुर से ऐसी ख़बरें नहीं आ रही हैं। स्थिति नियंत्रित कर ली गयी। लेकिन क्या आप जानते हैं कि छत्तीसगढ़ में 25 हज़ार, जी हां... 25 हज़ार से अधिक आदिवासी बच्चे चिकित्सा सुविधा की कमी के कारण मौत के शिकार हुए हैं। ये आंकड़े भारतीय संसद में आये हैं।

छग के राज्यसभा सदस्य रामविचार नेताम के सवाल के जवाब में खुद स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने यह आंकड़े दिए। इस पर छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री टी. एस. सिंहदेव ने मुहर लगाते हुए कहा भी कि यह राज्य शासन के ही दिए आंकड़े हैं। इसी तरह यूनिसेफ की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि कांग्रेस की सत्ता में '2019 से 2021 के बीच 18 हज़ार बच्चों की मृत्यु उनके जन्म के केवल 28 दिनों के भीतर हो गयी। ऐसे 26 हज़ार शिशु साल भर के भीतर मर जाते हैं। खुद यूनिसेफ प्रमुख जॉब जकारिया के हवाले से यह बयान छपा कि – छत्तीसगढ़ में हज़ारों ऐसे बच्चों की मृत्यु होने पर भी कोई चर्चा नहीं होती लेकिन केरल में एक ऐसी मौत भी राजनीतिक विषय हो जाता है।

सवाल तो यह है कि ऐसे किसी विषय के समाधान के बारे में तो तब सोचा जाय जब समस्या है, ऐसा स्वीकार भी करे कोई। प्रदेश की कांग्रेस सरकार को जितना ध्यान और संसाधन ऐसी समस्याओं के समाधान पर लगाना चाहिए, उससे अधिक ध्यान विज्ञापन देने के अपने ताकत और बाहुबल का उपयोग कर ऐसे विषयों को दबाने में किया जाता है। देश भर में कांग्रेस को चुनाव लड़ाने से बचे समय का उपयोग मुख्यमंत्री भूपेश बघेल अपने कम्युनिस्ट सलाहकारों के साथ ऐसे ही 'मीडिया प्रबंधन' में लगाते हैं। प्रबंधन से ही ऐसी ख़बरें कब्र से बाहर निकल नहीं पाती। बस ऐसी कोई भी घटना नहीं होने संबंधित सीएम का बयान ही हेडलाइन बन जाता है। 25 हज़ार से अधिक बच्चों की मौत संबंधी ख़बरों को भले प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री ने स्वीकार किया लेकिन सीएम बघेल ने संसद में प्रस्तुत ऐसे आंकड़े को भी 'भाजपा का आंकड़ा' कहने में हिचक नहीं दिखायी।

बच्ची की मौत के बाद पिता इश्वर लाश ले जाने के लिए एम्बुलेंस की मिन्नतें करता रहा लेकिन अस्पताल प्रशासन द्वारा उसे उपलब्ध नहीं करा पाने पर वे पैदल ही दस किलोमीटर अपने कंधे पर बेटी की लाश को लेकर निकल पड़े। पिछली भाजपा सरकार में ही मरीजों को चिकित्सा के लिए घर से अस्पताल तक लाने, या मृत्यु की स्थिति में पार्थिव शरीर को ससम्मान घर तक पहुचाने की पर्याप्त व्यवस्था की गयी थी।

इन पंक्तियों के लिखे जाने तक सीएम बघेल का एक और बयान यहां बड़ी 'खबर' के रूप में बताया जा रहा है। बकौल बघेल- कांग्रेस के तीन वर्ष के शासन में कोई भी मुठभेड़ नही हुआ है यहां। आप सोच कर भी क्षुब्ध हो जायेंगे कि भारत के किसी राज्य का चुना हुआ सीएम इस बेशर्मी से भी झूठ बोल सकता है। हाल ही में सुरक्षा बल की नौकरी के लिए तैयारी कर रहा बस्तर संभाग के नारायणपुर का युवक मानुराम नुरेटी फर्जी मुठभेड़ में मारे गए। पहले तो पुलिस ने इसे मुठभेड़ साबित करने की पूरी कोशिश की लेकिन विपक्ष के सवाल उठाने पर अंततः ऑन रिकॉर्ड आईजी विवेकानन्द ने माना कि वह मुठभेड़ फर्जी था। उसी गांव में उससे पहले भी मुठभेड़ में आदिवासियों की हत्या कर दी गयी थी। इससे पहले बस्तर के ही सिलगेर में तीन आदिवासियों को भून दिया गया जिसके बारे में एकाध कॉलम की ही सही लेकिन ख़बरें तमाम संस्थानों में प्रकाशित-प्रसारित हुई। प्रदेश भाजपा ने इस घटना पर जांच कमिटी भी बनायी जिस कमिटी को शासन ने उस इलाके में जांच के लिए घुसने नहीं दिया। फिर भी सीएम बाकायदा बयान दे रहे कि कोई मुठभेड़ नहीं हुआ है।

ऐसे बेशर्म झूठों और फरेबों का लगातार रिकॉर्ड कायम कर रही है कांग्रेस सरकार से आप किसी समाधान की उम्मीद कर भी कैसे सकते हैं? लेकिन सवाल इससे भी बड़ा यह है कि सिविल सोसाइटी से लेकर देश के मीडिया तक आखिर इतने अधिक सेलेक्टिव चुप्पियों का जवाब इतिहास को कैसे देगा भला? क्या हज़ारों बच्चों की हृदय विदारक मौतों को भी चयनात्मक रूप से ही देखा जाएगा? क्या ईश्वर दास के कंधे को दाना मांझी की तरह ही हमारे कन्धों का सहारा नहीं मिलना चाहिए? क्या सृष्टि का सबसे बड़ा बोझ यानी अपनी सात वर्ष की बेटी की लाश उठा कर पैदल दस किलोमीटर चल रहे ईश्वर हमारी ज़रा सी भी तवज्जो के अधिकारी नहीं हैं? देश के सामने छत्तीसगढ़ के ये सवाल शायद अनुत्तरित ही रह जाने हैं। या फिर प्रतीक्षा की जा रही होगी कि कांग्रेस सरकार नहीं रहने पर इन सवालों को उठाया जाएगा! फिलहाल तो छत्तीसगढ़ के इस उपेक्षा दर्द की कोई दवा नज़र नहीं आती। दिले नादां छत्तीसगढ़ को फिलहाल यही हुआ है। उसे ईश्वर नहीं भूपेश चाहिए। ●●●

गोवा में श्री प्रमोद सावंत और मणिपुर में श्री एन बीरेन सिंह ने भी दोबारा जनादेश प्राप्ति उपरांत दायित्व ग्रहण किया।

यशस्वी भवः